इकाई—10
समास—प्रकरण, अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव—सम्बन्धी सूत्रों की व्याख्या तथा उदाहरण, समस्त पदों की समासविग्रह प्रक्रिया का सूत्रोल्लेखपूर्वक निरूपण

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

द्वितीय वर्ष संस्कृत के द्वितीय प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम की इकाई 10 समास – प्रकरण से सम्बद्ध है। इसके अध्ययनोपरान्त आप जानेंगे –

(1) समास क्या है एवं समास कितने प्रकार का होता है ?

(2) समास—विग्रह से क्या तात्पर्य है ?

(3) संस्कृत भाषा का अध्ययन करते समय अर्थ का ज्ञान सम्यक रूप से कर सकेगें।

10.1 प्रस्तावना

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत भाषा रूपी दुर्ग को हम तब तक हस्तगत नहीं कर सकते जब तक हम सन्धि एवं समास रूपी परिखाओं को पार नहीं कर लेते।

समास का लक्षण संस्कृतज्ञों ने इस प्रकार किया है—

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते।।

अर्थात् जहाँ विभक्ति का लोप हो जाता है, पर उसका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और जहाँ अनेक पद

मिलकर एक पद रूप में परिणत हो जाते हैं उसे समास कहते है। उदाहरणार्थ राजपुरुषः का विग्रह है राज्ञः पुरुषः जब राजन् एवं पुरुष शब्दों की विभक्ति का लोप कर देगें तो शब्द होगा 'राजपुरुष' यही संक्षिप्तीकरण अथवा समसनम् 'शब्दों को पास–पास रखना' समास कहलाता है। संस्कृत में प्रमुख समास हैं अव्ययीभाव, तत्पुरुष, नञ् तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि एवं द्वन्द्व समास।

पाणिनि संस्कृत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित वैयाकरण हुए हैं उनके द्वारा रचित ग्रन्थ है 'अष्टाध्यायी'। यह ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय चार पादों में विभक्त है एवं प्रत्येक पाद में अनेक सूत्र है। प्रस्तुत इकाई में सूत्र के आगे उसकी संख्या भी अंकित है। यथा 2/4/50 इसका तात्पर्य है प्रस्तुत सूत्र पाणिनि कृत अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ पाद का पचासवाँ सूत्र है।

संस्कृत भाषा के अध्ययन को सुगम बनाने एवं भाषा की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए समास का अध्ययन नितान्त आवश्यक है।

10.2 समास का अर्थ, प्रकार, विग्रह इत्यादि

'समसनं समासः' संक्षेपीकरण को समास कहते है। जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक पद हो जाते हैं तो उसे समास कहते है। समास हो जाने पर उन दो समस्यमान पदों की विभक्तियों का प्रायः लोप हो जाता है। यथा राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः। यहाँ राज्ञः एवं पुरुष ये दो पद मिलकर राजपुरुषः यह नया पद बनाते है।

समास प्रायः पाँच प्रकार के होते हैं –

1. **केवल समास** – जो समास किसी संज्ञा से रहित होता है उसे केवल समास की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

2. **अव्ययीभाव समास** – प्रायः जिसमें पूर्व पद की प्रधानता होती है उसे अव्ययीभाव समास कहा जाता है। इसमें प्रायः पूर्व पद अव्यय होता है और उत्तर पद अनव्यय। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है।

3. **तत्पुरुष समास** – प्रायः जिसमें उत्तरपद की प्रधानता होती है वहाँ तत्पुरुष समास होता है। द्वितीयान्त से लेकर सप्तम्यन्त तक जिस–जिस विभक्यन्त का उत्तर पद के साथ समास होता है वह तत्पुरुष उसी विभक्ति के नाम से अभिहित किया जाता है। यथा द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष इत्यादि।

   कर्मधारय समास – तत्पुरुष का ही एक भेद होता है– कर्मधारय समास। जहाँ विशेषण एवं विशेष्य का समास होता है उसे कर्मधारय समास कहते है।

   द्विगु समास – यह कर्मधारय का ही एक भेद है। विशेषण एवं विशेष्य के समास में यदि विशेषण संख्यावाची हो तो उसे द्विगु समास कहते है।

4. **बहुव्रीहि समास** – प्रायः जहाँ न तो पूर्वपद की प्रधानता होती है और न ही उत्तरपद की अपितु इन पदों से सम्बद्ध किसी अन्य अर्थ की प्रधानता हो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। उदाहरणार्थ 'लम्बोदरः' 'लम्बं उदरं यस्य सः' यहाँ न तो लम्ब की ओर न ही उदरं की प्रधानता है वरन् अन्य पदार्थ 'गणेश' की प्रधानता है।

5. **द्वन्द्व समास** – 'च' के अर्थ में द्वन्द्व समास का विधान किया जाता है। इसमें दोनों ;या दो से अधिक सबद्ध पदों के अर्थों की प्रायः प्रधानता होती है।

समास – विग्रह

1. **लौकिक विग्रह** – जिसका लोक में प्रयोग किया जाता है जैसे 'राजपुरुषः' का 'राज्ञः पुरुषः'।

2. **अलौकिक विग्रह** – जिसका लोक में प्रयोग नहीं किया जाता है। जैसे राजपुरुषः का राजन् ङस् पुरुष सु।

10.3 अव्ययीभाव समास

अव्ययीभावः 2/1/5

यह अधिकार सूत्र है। इसका अधिकार 'तत्पुरुषः' इस सूत्र के पूर्व तक है। इसका तात्पर्य है तत्पुरुषः (2/1/21) सूत्र के पूर्व तक जो समासविधान किया जाएगा वह अव्ययीभावसंज्ञक होगा।

अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु। 2/1/6

विभक्ति, समीप, समृद्धि (सम्पत्ति का आधिक्य), व्यृद्धि (सम्पत्ति का अभाव), अव्यय (नाश), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्द–प्रादुर्भाव (शब्द की प्रकाशता), पश्चात् (पीछे), यथा (योग्यता, वीप्सा, पदार्थानविवृत्ति, एवं सादृश्य), आनुपूर्व्य (क्रमानुसार), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समानता), सम्पत्ति (अनुरूप) साकल्य (सम्पूर्णता) एवं अन्त (समाप्ति) इन सोलह अर्थों में से किसी भी एक अर्थ में विद्यमान अवयव का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है उसे अव्यवीभाव समास कहा जाता है।

(प्रायः जिस समास का विग्रह न हो या जिसके विग्रह में समास में गृहीत पदों से भिन्न पदों का (अस्वपद) प्रयोग किया जाता है उसे नित्य समास कहा जाता है।)

अव्ययीभाव समास अस्वपद विग्रह है। जब विग्रह में गृहीत पदों के अतिरिक्त शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उसे अस्वपद कहते है। उदाहरणार्थ 'यथाशक्ति' 'शक्तिमनतिक्रम्य' यहाँ अनतिक्रम्य शब्द समस्त पद में नहीं है अतः यह अस्वपद है।

10.3.1 प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम् 1/2/43

समासविधायक सूत्र में प्रथमा विभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है वह उपसर्जनसंज्ञक होता है। अव्ययं विभक्ति इत्यादि समासविधायक सूत्र में 'अव्ययम्' पद प्रथमाविभक्ति से निर्दिष्ट है, अतः इस पद से बोध्य अधि आदि अवयवों की अलौकिक विग्रह में उपसर्जनसंज्ञा हो जायेगी।

उपसर्जनं पूर्वम् 2/2/0

समास में उपसर्जन संज्ञक का पहले प्रयोग किया जाएगा।

विभक्ति अर्थ में अव्ययीभाव समास

अधिहरि

हरौ इतिअधिहरि — लौकिक विग्रह

हरि ङि अधि इति — अलौकिक विग्रह

अव्ययं विभक्ति........इत्यादि सूत्र से विभक्ति अर्थ में समास। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अवयव सुप् का लोप।

हरि अधि

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अवयव अधि की उपसर्जन संज्ञा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

अधि हरि

प्रथमा एकवचन में सुँ की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से समास की अव्यय संज्ञा। अव्ययादाप्सुपः सूत्र से अव्यय से परे सुप् का लोप करने पर रूप सिद्ध हुआ

अधिहरि

अव्ययीभावश्च 2/4/18

अव्ययीभाव समास नपुंसकलिंग में हो।

नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः 2/4/83

अदन्त अव्ययीभाव समास से परे सुप् का लोप नहीं होता है किन्तु पंचमी को छोड़कर अन्य विभक्तियों में सुप् के स्थान पर अम् आदेश हो जाता है। उदाहरणार्थ –

अधिगोपम्

गोपि इति अधिगोपम्	लौकिक विग्रह
गोपा ङि अधि इति	अलौकिक विग्रह

अव्ययं विभक्ति...........इत्यादि सूत्र से विभक्ति अर्थ में अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास। कृत्तद्धितसमासाश्च से समास की प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपो धातु प्रातिपदिकयोः' से सुप् का लोप।

गोपा अधि

'अव्ययीभावश्च' से समास की नपुंसकलिंग संज्ञा। 'ह्रस्वोनपुंसके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से नपुसंकलिंग के प्रातिपदिक को ह्रस्व हो जाएगा।

गोप अधि

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से अधि की उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

अधिगोप

स्वौजसमौट्0.........इत्यादि सूत्र से प्रथमा विभक्ति एकवचन में सुँ प्रत्यय की प्राप्ति 'अव्ययीभावः' सूत्र से अव्ययसंज्ञा। 'अव्ययदाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के प्रातिपदिक सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु **नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः** सूत्र से सुप् के लोप का निषेध एवं सुँ के स्थान पर अम् आदेश।

अधिगोप अम्

अमिपूर्वः सूत्र से पूर्वरूपएकादेश करने पर रूप सिद्ध हुआ।

अधिगोपम्

समीप अर्थ में अव्ययी भाव समास

उपकृष्णम् –

कृष्णस्य समीपे इति उपकृष्णम्	(लौकिक विग्रह)
कृष्ण ङस् उप इति उपकृष्णम्	(अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि...........' इत्यादि सूत्र से 'समीप अर्थं में उप अव्यय का सुबन्त के

साथ नित्य समास। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् का लोप।

कृष्ण उप

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा। 'उपसर्जनम् पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात

उप कृष्ण

प्रथमा एक वचन में 'सुँ' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्य' सूत्र से–अव्यय संज्ञा'। एवं 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु 'नाव्ययीभावदतोऽम् त्वपऽचम्याः' सूत्र से सुप् के लोप का निषेध एवं 'सुँ' को 'अम्' आदेश। इस प्रकार रूप बना

उपकृष्ण + अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश। रूप बना

'उपकृष्णम्'

समृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास

सुमद्रम्

मद्राणां समृद्धिः इति सुमद्रम्	(लौकिक विग्रह)
मद्र आम् सुँ (समृद्धयर्थक सु है)	(अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति समीप..........' इत्यादि सूत्र से समृद्धि अर्थ में स्थित सु अव्यय का सुबन्त पद के साथ समास। कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपौ धातु प्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय 'सुप्' का लोप

'मद्र सु'

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अव्यय 'सु' की उपसर्जन संज्ञा। एवं 'उपसर्जन पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का अर्थ निपात। इस प्रकार रूप बना

सुमद्र

प्रथमा एक वचन में 'सुँ' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' यूत्र से 'अव्यय संज्ञा' एवं 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के 'सुप्' क लोप की प्राप्ति। 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपंचम्याः' सूत्र से अव्यय के सुप् के लोप का निषेध एवं सु के स्थान पर 'अम्' आदेश

सुमद्र + अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना

'सुमद्रम्'

व्यृद्धि अर्थ में अव्ययी भाव समास

दुर्यवनम्

यवनानां व्यृद्धि इति दुर्यवनम्	(लौकिक विग्रह)
यवन आम् दुर् इति दुर्यवनम्	(अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्तिसमीप.........इत्यादि' सूत्र से व्यृद्धयर्थ में 'दुर' अव्यय का सुबन्त पद से समास। समास की 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपो धातु प्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् का लोप

यवन दुर्

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से दुर् की 'उपसर्जन संज्ञा' 'उपसर्जनं पूर्व' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात। इस प्रकार रूप बना

दुर् यवन

प्रथमा एकवचन में 'सुँ' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से 'अव्यय संज्ञा'। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से 'सुँ' के लोप की प्राप्ति। किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सुँ' के लोप का निषेध एवं 'सुँ' के स्थान पर 'अम्' आदेश।

दुर्यवन + अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना

'दुर्यवनम्'

अभाव अर्थ में अव्ययीभाव समास

निर्मक्षिकम् –

मक्षिकाणाम् अभावः इतिनिर्मक्षिकम् निर्मक्षिकम् (लौकिक विग्रह)

मक्षिका आम् नि (अभावअर्थक) (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति–समीप–समृद्धि........इत्यादि' सूत्र से अभाव अर्थ में निर् अव्यय का 'मक्षिकाणाम्' सुबन्त के साथ समास हुआ। समास की 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् का लोप। रूप बना

मक्षिका निर्

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'निर्' की उपसर्जन संज्ञा। 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात। इस प्रकार रूप बना

निर् मक्षिका

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से नपुसंकलिंग। एवं 'ह्रस्वोनपुंसकेप्रातिपदिकस्य' सूत्र से नपुसंकलिंग में प्रातिपदिक को ह्रस्व आदेश तो रूप बना

निर्मक्षिक

प्रथमा एकवचन में सुप् की प्राप्ति।

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्ययसंज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' के लोप का निषेध एवं 'सु' को अम् आदेश। रूप बना

निर्मक्षिक + अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना

'निर्मक्षिकम्'

10.3.2 अत्यय अर्थ में अव्ययी भाव समास

अतिहिमम् –

हिमस्य अत्ययोऽतिहिमम् (लौकिक विग्रह)

हिम ङस् अति (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति समीप..........इत्यादि' सूत्र से विनाश अर्थ में वर्तमान 'अति' अव्यय की सुबन्त 'हिमस्य' के साथ समास। समास की 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से प्रातिपदिक के अवयव 'सुप्' 'ङस्' का लोप।

हिम अति

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनं' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा। 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात। रूप बना

अतिहिम

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्य' सूत्र से 'अव्यय संज्ञा'। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सुप् के लोप की प्राप्ति। किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपंचम्याः' सूत्र से सु के लोप का निषेध एवं सु को अम् अदिश

अतिहिम + अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना

'अतिहिमम्'

असम्प्रति अर्थ में

अतिनिद्रम्

निद्रा सम्प्रति न युज्यते इति अतिनिद्रम् (लौकिक विग्रह)

निद्रा सु अति (असम्प्रति बोधक) (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति समीप..........' इत्यादि सूत्र से असम्प्रति अर्थ में 'अति' अव्यय का 'निद्रम्' सुबन्त के साथ समास। 'कृत्त(ितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातु प्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् 'सु' का लोप।

निद्रा अति

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा। 'उपसर्जनम् पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात

अतिनिद्रा

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से नपुंसकलिंग। 'ह्रस्वोस्नपुंसके प्रातिपदिकस्य' सूत्र से नपुंसकलिंग में प्रातिपदिक को ह्रस्व आदेश।

अतिनिद्र

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। अव्ययीभावश्च सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के 'सु' के लोप की प्राप्ति किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् व पंचम्याः' सूत्र से 'सु' के लोप का निषेध एवं 'अम्' आदेश

अतिनिद्र + अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना

'अतिनिद्रम्'

शब्दप्रादुर्भाव अर्थ में

इतिहरि

हरिशब्दस्य प्रकाश इतिहरि। (लौकिक)

हरि ङस् इति (अलौकिक विग्रह)

'अययंविभक्ति समीप समृद्धि........इत्यादि' सूत्र से शब्द प्रादुर्भाव अर्थ में वर्तमान 'इति' अव्यय का सुबन्त 'हरिः' के साथ समास। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के 'सुप्' 'ङस्' का लोप।

हरि इति

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के 'सुप्' का लोप। रूप बना

इतिहरि

पश्चाद् अर्थ में

अनुविष्णुः

'विष्णोः पश्चादनुविष्णुः' (लौकिक विग्रह)

विष्णु ङस् अनु (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति.............इत्यादि' सूत्र से पश्चाद् अर्थ में 'अनु' अव्यय का सुबन्त 'विष्णोः' के साथ समास। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् 'ङस्' का लोप।

विष्णु अनु

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अनु' की उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात

'अनु विष्णु'

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के सुप् 'सु' का लोप। रूप बना

'अनुविष्णु'

यथा अर्थ में अव्ययीभाव

यथा.................इसके चार अर्थ हैं– (1) योग्यता (2) वीप्सा (3) पदार्थानतिवृत्ति (4) सादृश्य।

योग्यता अर्थ में यथा

अनुरूपम् –

रूपस्य योग्यमनुरूपम्

रूप ङस् अनु

'अव्ययविभक्ति............इत्यादि' सूत्र से अनु अव्यय की सुबन्त रूपस्य के साथ समास। 'कृत्तर्(तसमासाश्च' से समास की प्रातिपदिकसंज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् 'ङस्' का लोप।

रूप अनु

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा 'अनु' की 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात

अनु रूप

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के सुप् के लोप की प्राप्ति। किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञचम्याः' सूत्र से 'सु' के लोप का निषेध एवं अम् आदेश।

अनुरूप अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से 'पूर्व रूप एकादेश' करने पर रूप बना।

'अनुरूपम्'

प्रत्यर्थम् –

अर्थम् अर्थम् प्रति इति प्रत्यर्थं	(लौकिक विग्रह)
अर्थअम् प्रति	(अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति' इत्यादि सूत्र से वीप्सा अर्थ में अव्यय प्रति का सुबन्त अर्थम् के साथ समास। 'कृत्तर्(तसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् 'अम्' का लोप।

अर्थ प्रति

'प्रथमानिर्दिष्टं उपसर्जनम्' सूत्र से प्रति की उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनम् पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

'प्रति अर्थ'

'इकोयणचि' सूत्र से यण संधि करने पर रूप बना 'प्रत्यर्थ'।

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। एवं अव्ययी भावश्च सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से 'सु' के लोप की प्राप्ति किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञचम्याः' सूत्र से अव्यय के 'सु' के लोप का निषेध एवं 'सु' को अम् आदेश।

प्रत्यर्थ + अम्

अमिपूर्व से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना।

'प्रत्यर्थम्'

यथाशक्ति –

शक्तिं अनतिक्रम्य यथाशक्ति (लौकिक विग्रह)

शक्ति अम् यथा (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति...........' इत्यादि सूत्र से 'पदार्थानतिवृत्ति' अर्थ में यथा अव्यय का सुबन्त 'शक्तिम्' के साथ समास। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् का लोप।

शक्ति यथा

'प्रथमानिर्दिष्टं उपसर्जनम्' से 'यथा' अव्यय की उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

यथा शक्ति

प्रथमा एकवचन में 'सु' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्ययी भाव संज्ञा। 'अव्ययदाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के 'सुप्' 'सु' का लोप। रूप बना।

'यथाशक्ति'

अव्ययीभावे चाकाले –

पूर्वसूत्रों की अनुवृत्ति से इस सूत्र का भावार्थ है कालवाची उत्तरपद के परे न रहते हुए अव्ययी भाव समास में 'सह' को 'स' आदेश होता है। उदाहरणार्थ–

सादृश्य अर्थ में

सहरि –

हरेः सादृश्यम् सहरि (लौकिक विग्रह)

हरि ङस् सह (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययः विभक्ति...........इत्यादि' सूत्र से सादृश्य अर्थ में सह अव्यय का सुबन्त 'हरिः' के साथ समास। 'कृत्त(तिसमासाश्च' सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् 'ङस्' का लोप।

हरि सह

'प्रथमानिर्दिष्टं उपसर्जनम्' सूत्र से 'सह' की उपसर्जन संज्ञा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

'सह हरि'

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश।

'स हरि'

प्रथमा एकवचन में सु की प्राप्ति। अव्ययीभावश्च सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से

अव्यय के सुप् का लोप। रूप बना

सहरि।

10.3.3 आनुपूर्व्य अर्थ में

अनुज्येष्ठम्

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण (लौकिक विग्रह)

ज्येष्ठ ङस् अनु (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं समीप......' इत्यादि सूत्र से अव्यय अनु के साथ वर्तमान 'अनुप्येष्ठस्य' सुबन्त का समास। 'कृत्त(तिसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अवयव सुप् 'ङस्' का लोप।

ज्येष्ठ अनु

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अनु' की उपसर्जन संज्ञा। एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात ।

अनु ज्येष्ठ

प्रथमा एक वचन में 'सु' की प्राप्ति। अव्ययीभावश्च से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु 'नाव्ययी–भावादतोऽम्त्वपञचम्याः' सूत्र से 'सु' को अम् आदेश।

अनुज्येष्ठ + अम्

'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप एकादेश करने पर रूप बना।

'अनुज्येष्ठम्'

युगपद् अर्थ में

सचक्रम्

चक्रेण युगपद् (लौकिक)

चक्र टा सह (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति........' सूत्र से यौगपद्य अर्थ में अव्यय सह का वर्तमान सुबन्त चक्रेण के साथ समास 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। एवं 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के सुप् का लोप।

चक्र सह

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से उपसर्जन संज्ञा 'उपसर्जनम् पूर्वम्' से उपसर्जन का पूर्व निपात।

सह चक्र

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश।

सचक्र

प्रथमा एकवचन में 'सु'। अव्ययीभावश्च से अव्यय संज्ञा 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के सुप् के लोप की प्राप्ति। किन्तु 'नाव्ययीभावादातोऽम् त्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' के लोप की प्राप्ति एवं 'सु' को अम् आदेश।

सचक्र + अम्

अमिपूर्वः से पूर्व रूप एकादेश करने पर रूप बना।

'सचक्रम्'

सादृश्य अर्थ में अव्ययी भाव समास

ससखि

सदृशः सख्या ससखि (लौकिक वि.)

सखि टा सह (अलौकिक वि.)

'अव्ययंविभक्ति.........' सूत्र से सादृश्य अर्थ में सह अव्यय के साथ सुबन्त सख्या का समास। 'कृत्त.....' से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातु..........' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् का लोप।

सखि सह

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अव्यय की उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनम् पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

सह सखि

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह हो स आदेश।

ससखि

प्रथमा एकवचन में सु की 'प्राप्ति'। 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से सुप् का लोप रूप सिद्ध हुआ।

ससखि

सम्पत्ति अर्थ में अव्ययी भाव समास

सक्षत्रम्

क्षत्राणां सम्पत्तिः सक्षत्रम् (लौकिक विग्रह)

क्षत्र आम् सह (अलौकिक)

'अव्ययं विभक्ति............' सूत्र से सम्पत्ति अर्थ में अव्यय सह के साथ क्षत्राणां सुबन्त का समास। 'कृत्त............' से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातु...........' से प्रातिपदिक के सुप् का लोप।

क्षत्र सह

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा। 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा का पूर्व निपात

सह क्षत्र

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश

सक्षत्र

प्रथमा विभक्ति एक वचन में सुँ की प्राप्ति। 'अव्ययी भावश्च' से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के 'सुप्' के लोप की प्राप्ति। किन्तु 'नाव्ययी.......' सूत्र से लोप की निषेध व 'अम्' आदेश। 'अमिपूर्वः' से पूर्व रूप एकादेश होने पर रूप बना।

सक्षत्रम्

साकल्य अर्थ में अव्ययी भाव समास

सतृणम्

तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम् (लौकिक विग्रह)

तृण अम् सह (अलौकिक विग्रह)

'अव्ययं विभक्ति.........' सूत्र से साकल्य अर्थ में अव्यय सह का सुबन्त तृणम् के साथ समास। 'कृत्त............' से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातु...........' से प्रातिपदिक के सुप् का लोप।

तृण सह

'प्रथमा...........' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा। 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा का पूर्व निपात

सह तृणम्

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश

सतृण

प्रथमा एकवचन में 'सुँ' की प्राप्ति। अव्ययीभावश्च से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' से सुप् के लोप की प्राप्ति। किन्तु 'नाव्ययीभाव.........' सूत्र से सु के लोप का निषेध व अम् आदेश

सतृण + अम्

अमिपूर्वः से पूर्वरूप एकादेश करने पर रूप बना

सतृणम्

अन्त अर्थ में

साग्नि

अग्नि ग्रन्थपर्यन्तम् (लौकिक विग्रह)

अग्नि अम् सह (अलौकिक)

'अव्ययं विभक्ति................' सूत्र से अन्त अर्थ में अव्यय सह का वर्तमान सुबन्त अग्नि के साथ समास। 'कृत्त........' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। 'सुपोधातु............' सूत्र से सुप् का लोप।

अग्नि सह

उपसर्जन संज्ञा 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से। 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन का पूर्व निपात।

सह अग्नि

'अव्ययीभाव चाकाले' सूत्र से सह का स आदेश।

स अग्नि

'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ सन्धि।

साग्नि

प्रथमा एक वचन में 'सु' की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से अव्यय के सुप् का लोप रूप बना।

साग्नि

नदीभिश्च 2/1/19

संख्यावाची सुबन्त, नद्यर्थक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त होता है और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है। 'समाहारे चायमिष्यते' नियम से यह समाहार अर्थ में ही होता है।

पंचगंगम्

पञ्चानां गंगानां समाहारः (लौकिक विग्रह)

पञ्चन् आम् गंगाआम् (अलौकिक विग्रह)

संख्यावाची सुबन्त पञ्चन् का नद्यर्थक सुबन्त गंगा के साथ समास। पंचन् आम् की 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व निपात।

पञ्चन् गंगा

'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से पञ्चन् के पदान्त नकार का लोप। कृत्तद्धित समासाश्च से समास की प्रातिपदिक संज्ञा। सुपोधातु..........से प्रातिपदिक के सुप् का लोप।

पञ्चगंगा

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से नपुंसक लिंग। 'ह्रस्वोनपुंसकेप्रातिपदिकस्य सूत्र से प्रातिपदिक को ह्रस्व

पञ्चगंग

स्वौजसां...........सूत्र से प्रथमा विभक्ति एकवचन के अर्थ में 'सु' की प्राप्ति ।

पञ्चगंग सु

अव्ययादाप्सुपः से सुप् के लोप की प्राप्ति नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः से सु को अम् आदेश। अमिपूर्वः से पूर्वरुप एकादेश करने पर रूप सिद्ध हुआ–

पञ्चगंगम्

अनश्च 5/4/108

यदि अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' अन्त वाला शब्द हो तो उससे परे समासान्त टच् प्रत्यय होता है।

नस्तद्धिते 6/4/144

तद्धित प्रत्यय के परे रहने पर नकारान्त भसंज्ञक की 'टि' का लोप होता है। (भ संज्ञा यचिभम् सूत्र से होती है।) उदाहरणार्थ –

उपराजम्

राज्ञः समीपम्   (लौ. वि.)

राजन् ङस् उप   (अलौ. वि.)

अव्ययं विभक्ति.............इत्यादि सूत्र से समीपवाची अव्यय उप का सुबन्त राजन् के साथ अव्ययीभाव समास।

प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनं सूत्र से उप की उपसर्जन संज्ञा **उपसर्जनं पूर्वम्** सूत्र से पूर्व निपात। उपराजन्

कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा, सुपो...........से सुप् का लोप उपराजन् अवश्य सूत्र से अन्त्य अन् होने से समासान्त टच् प्रत्यय

उपराजन् टच्

'टच्' के अन्तिम चकार की हलन्त्यम् सूत्र से एवं टकार की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा व लोप

उपराजन् अ

'यचिभम्' सूत्र से उपराजन् की 'भ' संज्ञा एवं नस्तद्धिते सूत्र से 'भ' संज्ञक की 'टि' का लोप

उपराज् अ

प्रथमा एक वचन में सु की प्राप्ति। 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा अव्ययादाप्सुपः से अव्यय के सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञचम्याः से सु के लोप का निषेध व अम् आदेश।

उपराज अम्

अमिपूर्वः से पूर्वरूप एकादेश करने पर रूप सिद्ध हुआ।

उपराजम्

अध्यात्मम्

आत्मनि इति   (लौ. वि.)

आत्मन् ङि अधि   (अलौ. वि.)

अव्ययं विभक्ति..........सूत्र से विभक्ति अर्थ में अधि अवयव का सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास। 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से अधि की उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से पूर्व निपात

अधि आत्मन् ङि

'कृत्तद्धिसमासाश्च सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा एवं **सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'** सूत्र से सुप् का लोप

अधि आत्मन्

इकोयणचि सूत्र से यणादेश करने पर

अध्यात्मन्

अनश्च सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय

अध्यात्मन् टच्

टच् प्रत्यय के अन्त्य चकार की **हलत्यम्** एवं आदि टकार की **चुटू** से इत्संज्ञा व लोप

अध्यात्मन् अ

यचिमम् से 'भसंज्ञा' एवं नस्तद्धिते से भसंज्ञक की 'टि' का लोप करने पर

अध्यात्म् अ

प्रथमा एक वचन में सु की प्राप्ति

अध्यात्म सुँ

'अव्ययादाप्सुपः' से सुप् के लोप की प्राप्ति थी किन्तु **नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः** सूत्र से सुप् के लोप का निषेध एवं सु को अम् आदेश

अध्यात्म अम्

'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप एकादेश करने पर रूप सिद्ध हुआ

अध्यात्मम्

10.4 बोध प्रश्न

1. निम्न शब्दों में समास का निर्धारण करते हुए सूत्र बताइये।

   (1) समुद्रम   (2) अधिगोपम्

   (3) अतिहिमम्   (4) इतिहरि

2. सादृश्य, साकल्य अर्थों में अव्ययीभाव समास की सिद्धि कीजिए।
3. समास का अर्थ एवं प्रकार बताइये।
4. अव्ययीभाव समास की परिभाषा उदाहरणसहित बताइये।

10.5 कतिपय उपयोगी पुस्तकें

1. लघु सिद्धान्त कौमुदी 'भैमी व्याख्या', पं. भीमसेन शर्मा (समास प्रकरण)
2. लघु सिद्धान्त कौमुदी, पं. महेश सिंह कुशवाह
3. लघु सिद्धान्त कौमुदी, पं. धरानन्द शास्त्री
4. लघु सिद्धान्त कौमुदी, डॉ. अर्कनाथ चौधरी

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. द्रष्टव्य भाग संख्या 10.3.1 में।
2. द्रष्टव्य भाग संख्या 10.3.3 में।
3. द्रष्टव्य भाग संख्या 10.2 में।
4. द्रष्टव्य भाग संख्या 10.3 में।

इकाई–11

तत्पुरुष समास, व्यधिकरण तत्पुरुष समास

व्यधिकरण तत्पुरुष समास–सम्बन्धी सूत्रों की व्याख्या तथा उदाहरण, समस्त पदों की समास विग्रह–प्रक्रिया का सूत्रोल्लेख पूर्वक निरूपण

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई व्याकरण की महत्त्वपूर्ण अवधारणा समास से सम्बद्ध है। समास काव्य को पढ़ने तथा उसका अर्थ समझाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. तत्पुरुष समास को गहनता से समझ पायेंगे।
2. पदों के लौकिक तथा अलौकिक विग्रह से भी काव्य का अर्थसंगतिकरण सरल हो जाता है।

11.1 प्रस्तावना

तत्पुरुष समास तथ उसमें भी व्यधिकरण तत्पुरुष से यह तात्पर्य है कि पदों का जब विग्रह किया जायेगा तो दोनों पदों में पृथक्–पृथक् विभक्ति होगी। तृतीया तत्पुरुष के दो नियम हैं अतः उपसर्जन संज्ञा हेतु विशेष अनुकर्षण करना पड़ता है। पंचमी तत्पुरुष में स्तोक आदि से परे पंचमी विभक्ति का समास में भी लोप नहीं होता है।

11.2 द्वितीया तत्पुरुष समास

द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः 2/1/13

द्वितीयान्त सुबन्त श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न इन प्रातिपदिकों से बने सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है एवं उसकी तत्पुरुष संज्ञा होती है। उदाहरणार्थ–

कृष्णश्रितः

कृष्णं श्रितः (लौ. वि.)

कृष्ण अम् श्रित सु (अलौ. वि.)

द्वितीयान्त सुबन्त कृष्ण अम् का श्रित सु सुबन्त के साथ द्वितीया श्रितातीत इत्यादि सूत्र से तत्पुरुष समास।

समास विधायक सूत्र द्वितीया श्रितातीत..........इत्यादि सूत्र में द्वितीया शब्द प्रथमा में है। द्वितीया विभक्ति यहाँ कृष्ण अम् में है। अतः प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से 'कृष्ण अम्' की उपसर्जन संज्ञा व उपसर्जनं पूर्वम् से पूर्व निपात।

कृष्ण अम् श्रित सु

कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा, सुपोधातु..... से प्रातिपदिक के सुप् का लोप

कृष्ण श्रित

प्रथमाविभक्ति एक वचन में सुँ प्रत्यय की प्राप्ति

कृष्णश्रित सुँ

'उपदेशेऽजनुनासिकइत्' सूत्र से सुँ में स्थित अनुनासिक 'उँ' की इत्संज्ञा व तस्यलोपः से लोप

कृष्णश्रित स्

'ससजुषो रुँः' से स् को रुँत्व आदेश

कृष्णश्रित रुँ

पुनः उपदेशे............सूत्र से उँ की इत्संज्ञा व लोप 'विरामोऽवसानम्' सूत्र से र् की अवसान संज्ञा। 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से अवसान संज्ञक 'र्' को विसर्ग आदेश करने पर रूप सिद्ध हुआ।

कृष्णश्रितः

ध्यातव्य है उपर्युक्त पाँच सूत्र 'सुँ' को विसर्ग बनाने हेतु हैं। अतः आगे जहाँ भी प्रथमा एक वचन में सुँ को विसर्ग बनाना होगा इन्हीं सूत्रों का प्रयोग होगा।

इसी भाँति अतीत अर्थ में

आशातीतः

आशां अतीतः लौ. वि.

आशा अम् अतीत सु अलौ. वि.

पतित अर्थ में

नरकपतितः

नरकं पतितः लौ. वि.

नरक अम् पतित सु अलौ. वि.

गत अर्थ में

स्वर्गगतः

स्वर्गं गतः		लौ. वि.

स्वर्ग अम् गत सु		अलौ. वि.

अत्यस्त अर्थ में

कूपाऽत्यस्तः

कूपं अत्यस्तः		लौ.वि.

कूप अम् अत्यस्त सु		अलौ. वि.

प्राप्त अर्थ में

सुखप्राप्तः

सुखं प्राप्तः		लौ. वि.

सुख अम् प्राप्त सु		अलौ. वि.

आपन्न अर्थ में

संकटापन्नः

संकटं आपन्नः		लौ. वि.

संकट अम् आपन्न सु		अलौ. वि.

द्वितीयाश्रिता. इत्यादि सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष समास होगा। उपसर्जन संज्ञा, पूर्व निपात, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लोप, प्रथमा विभक्ति एक वचन में सु की प्राप्ति, विसर्ग विषयक सूत्र लगाने से कृष्णश्रितः वत् अन्य शब्द आशातीतः, नरकपतितः स्वर्गगतः, कूपात्यस्तः, सुखप्राप्तः, संकटापन्नः शब्द सि(हो जायेंगें।

11.2 तृतीया तत्पुरुष समास

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन 2/1/29

तृतीयान्त पद का तृतीया पद के अर्थ द्वारा निर्मित (उत्पन्न किए गए) गुण के वाचक पद के साथ एवं 'अर्थ' पद के साथ समास हो। उदाहरणार्थ 'शंकुलया खण्डः' इस विग्रह में तृतीयान्त शंकुलया का तत्कृतगुणवाचक सुबन्त 'खण्ड' से समास होकर 'शंकुला खण्डः' रुप बनता है।

शंकुलाखण्डः

शंकुलया खण्डः इति		लौ. वि.

शंकुला टा खण्ड सु		अलौ. वि.

तृतीयान्त शंकुलया का तत्कृत गुणवाचक सुबन्त 'खण्डः' से 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से समास हुआ। समासविधायक सूत्र में तृतीया पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य शंकुला टा की प्रथमा निर्दिष्टं...........सूत्र से उपसर्जन संज्ञा एवं उपसर्जनं पूर्वं से पूर्वम् निपात।

कृत्तद्धित..........सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुपोधातु.........सूत्र से सुप् का लोप।

शंकुलाखण्ड

प्रथमा एक वचन में सुँ प्रत्यय।

शंकुलाखण्ड सुँ

रुँत्व एवं विसर्ग आदेश करने पर शङ्कुलाखण्डः रुप सिद्ध हो जाता है।

धान्यार्थः

धान्येन अर्थः लौकिक विग्रह

धान्य टा अर्थ सुँ अलौकिक विग्रह

तृतीयान्त 'धान्य टा' का 'अर्थ सुँ' सुबन्त के साथ 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास। तृतीयान्त की उपसर्जन संज्ञा, पूर्वनिपात, प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुप् का लोप करने पर रूप बना।

धान्य अर्थ

'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ संधि करने पर रूप हुआ।

धान्यार्थ

प्रथमा एक वचन में सुँ प्रत्यय।

धान्यार्थ सुँ

रुँत्व एवं विसर्ग आदेश करने पर धान्यार्थः रूप सिद्ध हो जाता है।

कर्तृकरणे कृता बहुलम् 2/1/31

कर्ता एवं करण अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त सुबन्त का सुबन्त कृदन्त (कृत् प्रत्यय जिसके अन्त में हो) के साथ बहुलता से समास होता है। एवं वह समास तत्पुरुष होता है। बहुलता से तात्पर्य है कि समास कभी होता है कभी नहीं। उदाहरणार्थ – हरित्रातः (कर्ता अर्थ में)

हरिणा त्रातः इति लौकिक विग्रह

हरि टा त्रात सुँ इति अलौकिक विग्रह

हरि शब्द त्राण क्रिया का कर्ता है एवं तृतीयान्त है। 'त्रात' शब्द क्त प्रत्ययान्त होने से कृदन्त है। अतः तृतीयान्त 'हरि' शब्द का सुबन्त कृदन्त 'त्रातः' के साथ 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास। समास विधायक सूत्र कर्तृकरणे........... सूत्र में स्थित कर्तृ पद से बोध्य विग्रह में स्थित 'हरि' शब्द की प्रथमा निर्दिष्टं...........इत्यादि सूत्र से उपसर्जन संज्ञा एवं पूर्व निपात। कृत्तद्धित.......सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुपोधातु.........सूत्र से प्रातिपदिक के सुप् का लोप

हरित्रात

प्रथमा विभक्ति एक वचन में सुँ प्रत्यय। रूँत्व एवं विसर्ग विषयक कार्य करने पर रूप सिद्ध हुआ।

हरित्रातः

नख भिन्नः (करण अर्थ में)

नखैः भिन्नः इति लौकिक विग्रह

नख भिस् भिन्न सुँ अलौकिक विग्रह

अलौकिक विग्रह में 'नख भिस्' इस करणतृतीयान्त का 'भिन्न सुँ' इस कृदन्त सुबन्त के साथ 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से बहुलता से तृतीया तत्पुरुष समास। उपसर्जन संज्ञा, पूर्व निपात, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लोप

नख भिन्न

प्रथमा विभक्ति एकवचन में सुँ प्रत्यय नखभिन्न सुँ।

रूँत्व एवं विसर्ग विषयक कार्य करने पर रूप सिद्ध हुआ।

नखभिन्नः

11.3 चतुर्थी तत्पुरुष समास

चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः 2/1/35

चतुर्थ्यन्त के अर्थ के निमित्त जो वस्तु हो, उसके वाचक पद के साथ, तथा अर्थ, बलि, हित, सुख एवं रक्षित इन पदों के साथ चतुर्थ्यन्त का समास होता है। तदर्थ के साथ चतुर्थी का जो समास होता है वह प्रकृतिविकृतिभाव में ही इष्ट है। अन्यत्र नहीं।

तदर्थ के साथ चतुर्थी तत्पुरुष समास

यूपदारू (तदर्थ) चतुर्थ्यन्त का तदर्थ से समास

यूपाय दारू इति लौ. विग्रह

यूप ङे दारू सुँ अलौकिक विग्रह

यहाँ दारू चतुर्थ्यन्त यूप के लिए है अतः यहाँ चतुर्थी तदर्थार्थबलि..........इत्यादि सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास। समास विधायक सूत्र में चतुर्थी पद प्रथमनिर्दिष्ट है अतः इसके बोध्य यूप ङे. की प्रथमा निर्दिष्ट..........सूत्र से उपसर्जन संज्ञा व उपसर्जनं पूर्वम् से पूर्व निपात।

यूप ङे. दारू सुँ

कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा व सुपोधातु........सूत्र से सुप् का लोप।

यूप दारू

प्रथमा विभक्ति एक वचन में सुँ प्रत्यय

यूप दारू सुँ

'परवल्लिंग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' सूत्र द्वारा उत्तरपद के लिंगानुसार तत्पुरुष के भी नपुंसक माने जाने से 'स्वर्मोनपुंसकात्' सूत्र से सुँ का लुक् होकर प्रयोग सिद्ध हुआ।

यूप दारू

अर्थ के साथ चतुर्थी तत्पुरुष समास

अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिंगता चेति वक्तव्यम् (वार्तिक)

अर्थ के साथ चतुर्थ्यन्त का समास नित्य समास कहना चाहिये। और समस्तपद का लिंगवचन विशेष्य के अनुसार ही समझना चाहिये।

द्विजार्थः सूपः

द्विजाय अयम् लौ. वि.

द्विज ङे. अर्थ सु अलौ. वि.

चतुर्थ्यन्त पद 'द्विजाय' का 'अर्थ' के साथ चतुर्थी तदर्थार्थ........सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास। अर्थेन नित्य समासो...............वार्तिक से समास का नित्य रूप से विधान एवं विशेष्य के अनुसार लिंग। यहाँ 'सूपः' विशेष्य पुल्लिग है अतः द्विजार्थः में भी पुल्लिग एक वचन ही प्रयुक्त होगा।

कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुपोधातु............से सुप् का लोप

द्विज अर्थ

अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ संधि करने पर

द्विजार्थ

प्रथमाविभक्ति एक वचन में सुँ प्रत्यय

द्विजार्थ सुँ

रूँत्व एवं विसर्ग विषयक कार्य करने पर रूप सिद्ध हुआ

द्विजार्थः सूपः

द्विजार्था यवागूः

द्विजाय इयम् लौकिक विग्रह

द्विज ङे. अर्थ सु. अलौकिक विग्रह

द्विजार्थ तक की सिद्धि पूर्व शब्दानुसार (द्विजार्थः सूपः) के अनुसार

यहाँ विशेष्य यवागूः (स्त्रीलिंग) है अतः स्त्रीत्व की विवक्षा में द्विजार्थ शब्द से

अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप् प्रत्यय	द्विजार्थ टाप्
प् की हलन्त्यम् एवं ट् की चुटू सूत्र से इत्संज्ञा व लोप	द्विजार्थ आ
अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घादेश	द्विजार्था
प्रथमा एक वचन में सुँ प्रत्यय।	द्विजार्था सुँ
अनुनासिक उँ की उपदेशेऽज.......से इत्संज्ञा व लोप	द्विजार्था स्
अपृक्त स् का हल्ङयाब्भ्य..........इत्यादि सूत्र से लोप होकर रूप बनेगा	द्विजार्था यवागूः

द्विजार्थम् पयः

यहाँ विशेष्य पयः नपुंसकलिंग है। अतः प्रथमा एक वचन में सुँ प्रत्यय

द्विजार्थ सुँ

नपुंसकलिंग में अतोऽम् सूत्र से सुँ को अम् आदेश।

द्विजार्थ अम्

अमिपूर्वः सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर शब्द सिद्ध होगा।

द्विजार्थं पयः

चतुर्थ्यन्त सुबन्त का 'बलि' के साथ समास।

भूतबलिः

भूतेभ्यो बलिः — लौ.वि.

भूत भ्यास् बलि सुँ — अलौकिक विग्रह

यहाँ चतुर्थ्यन्त 'भूतभ्यस्' का 'बलि सुँ' सुबन्त के साथ चतुर्थी तदर्थार्थबलि......सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास। चतुर्थी विभक्ति से बोध्य भूतभ्यस् की उपसर्जन संज्ञा, पूर्व निपात, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लोप। भूतबलि

प्रथमा एकवचन में सुँ प्रत्यय करने पर। — भूतबलि सुँ

विसर्ग सम्बन्धी कार्य करने पर रूप सिद्ध होगा। — भूतबलिः

चतुर्थ्यन्त सुबन्त का 'हित' सुबन्त के साथ समास

गोहितम्

गोभ्यो हितम् — लौकिक विग्रह

गो भ्यस् हित सुँ — अलौकिक विग्रह

चतुर्थ्यन्त 'गोभ्यस्' सुबन्त का 'हित सुँ' सुबन्त के साथ चतुर्थी तदर्थार्थ.........सूत्र से तत्पुरुष समास। चतुर्थी विभक्ति से बोध्य गोभ्यस् की उपसर्जन संज्ञा, पूर्वनिपात, प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुप् का लोप।

गोहित

प्रथमा एक वचन में सुँ की प्राप्ति।

गोहित सुँ

परवल्लिंग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः से हित के नपुंसक होने के कारण नपुसंकलिंग। अतोऽम् से नपुंसक लिंग में सुँ को अम् आदेश।

गोहित अम्

अमिपूर्वः से पूर्वरूपएकादेश करने पर शब्द सिद्ध हुआ।

गोहितम्

इसी भाँति गोभ्यः सुखम् गोसुखम् एवं गोभ्यो रक्षितं गोरक्षितम् शब्दों की रूप सिद्धि होती है।

11.4 पंचमी तत्पुरुष समास

पंचमी भयेन 2/1/36

पंचम्यन्त सुबन्त, भयप्रकृतिक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त होता है और वह समास पंचमी तत्पुरुष होता है। उदाहरणार्थ

चोरभयम् — चोराद् भयं — लौकिक विग्रह

चोर ङसि् भय सु — अलौ. वि.

'पंचमी' शब्द सूत्र में प्रथमान्त है एवं यह 'चोराद्' शब्द को सूचित करता है अतः 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से इसकी उपसर्जन संज्ञा एवं उपसर्जनम् पूर्वम् सूत्र से उसका पूर्व निपात।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा एवं 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से प्रातिपदिक के अवयव सुप् का लोप।

चोरभय

प्रथमा एक वचन में 'सु' की प्राप्ति। नपुंसकलिंग एकवचन में 'सु' को अम् आदेश।

चोरभय + अम्

'अमिपूर्वः' से पूर्वरूप एकादेश करने पर रूप बना।

चोरभयम्

भयभीतभीतिभीभिरिति वाच्यम् (वार्तिक)

वार्तिककार ने पंचमी भयेन सूत्र के संदर्भ में यह जोड़ा है कि 'भय' शब्द के अतिरिक्त भीत, भीति, और भी (डर) शब्दों के साथ भी पंचम्यन्त का समास कहा है. यथा भयाद् भीतो भयभीतः, सिंहाद्भीतिः सिंहभीतिः इत्यादि।

स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन 2/1/38

स्तोकार्थक (स्वल्पार्थक), अन्तिकार्थक (समीपार्थक), दूरार्थक एवं कृच्छ्र शब्द इन चार प्रातिपदिकों के पंचम्यन्त सुबन्त का क्त प्रत्ययान्त के सुबन्त के साथ समास होता है और वह समास पंचमी तत्पुरुष समास कहलाता है।

पंचम्याः स्तोकादिभ्यः 6/3/2

स्तोकादियों से परे पंचमीविभक्ति का लोप न हो उत्तर पद के परे रहते।

स्तोकान्मुक्तः

स्तोकाद् मुक्तः लौ. वि.

स्तोक ङसि मुक्त सुँ अलौकिक विग्रह

'पंचम्यन्त स्तोकङसि' का क्त प्रत्ययान्त 'मुक्त सुँ' के साथ स्तोकान्तिकदूरार्थ.......सूत्र से पंचमी तत्पुरुष समास। समासविधायक सूत्र में प्रथम विभक्ति से बोध्य स्तोकङसि की उपसर्जन संज्ञा, पूर्व निपात। कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुपोधातु................ से सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु पंचम्याः स्तोकादिभ्यः से पंचमी के लोप का निषेध।

स्तोक ङसि मुक्त

'टा–ङसि – ङसामिनात्स्याः' सूत्र से ङसि के स्थान पर आत् आदेश करने पर।

स्तोक आत् मुक्त

अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घादेश। स्तोकात् मुक्त

झलां जशोऽन्ते से जश्त्व दकार। स्तोकाद् मुक्त।

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा सूत्र से दकार को वैकल्पिक अनुनासिक नकार।

स्तोकान् मुक्त

प्रथमा विभक्ति एकवचन में सुँ। विसर्गविषयक कार्य करने पर सिद्ध हुआ।

स्तोकान्मुक्तः

अन्तिकादागतः

अन्तिकात् आगतः लौ.वि.

अन्तिक ङसि आगत सुँ अलौकिक वि.

पंच्म्यन्त 'अन्तिक ङसि' सुबन्त का क्तप्रत्ययान्त सुबन्त 'आगत' के साथ स्तोकान्तिक–दूरार्थ........... इत्यादि सूत्र से पंचमी तत्पुरुष समास। समासविधायक सूत्र में प्रथमा विभक्ति से बोध्य 'अन्तिक' की प्रथमानिर्दिष्ट...........सूत्र से उपसर्जन संज्ञा व उपसर्जनं पूर्वं से पूर्व निपात। प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुपो धातु प्रातिपदिकयोः सूत्र से प्रातिपदिक के सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु पंचम्याः स्तोकादिभ्यः सूत्र पंचमी के लोप का निषेध

अन्तिक ङसि आगत

टा–ङसि–ङसामिनात्स्याः सूत्र से ङसि के स्थान पर आत् आदेश करने पर।

अन्तिक आत् आगत

अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घादेश। अन्तिकात् आगत

झलां जशोऽन्ते से जश्त्व दकार। अन्तिकाद् आगत

प्रथमा एक वचन में सुँ। अन्तिकादागत + सुँ

विसर्ग विषयक कार्य करने पर प्रयोग सिद्ध हुआ। अन्तिकादागतः

इसी भाँति दूरादागतः एवं कृच्छ्रादागतः की रूप सिद्धि की जाएगी।

दूरादागतः

दूरात् आगतः लौ. वि.

दूर ङसि आगत सु अलौ. वि.

स्तोकान्तिक..........सूत्र से पंचमी तत्पुरुष समास, उपसर्जन संज्ञा, पूर्वनिपात, प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुप् के लोप की प्राप्ति। पंचम्याः...............सूत्र से पंचमी के लोप का निषेध। दूर ङसि आगत

टा. ङसिङसामिनात्स्याः से ङसि को आत् आदेश। दूर आत् आगत

दीर्घ आदेश। दूरात् आगत

झलां जशोऽन्ते से दकार। दूरादागत

प्रथमा एक वचन में सुँ। सुँ को रूँत्व व विसर्ग करने पर रूप सिद्ध हुआ।

दूरादागतः

कृच्छ्रादागतः

कृच्छ्रात् आगतः

कृच्छ्र ङसि आगत सुँ

पंचम्यन्त 'कृच्छ्राद्' का कृत प्रत्ययान्त 'आगत' के साथ 'स्तोकाऽन्तिक–दूरार्थ –कृच्छ्रेण क्तेन' सूत्र से समास। 'कृच्छ्राद्' की उपसर्जन संज्ञा एवं पूर्व निपात। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा एवं

'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से प्रातिपदिक के अव्यय सुप् के लोप की प्राप्ति किन्तु 'पंचम्याः स्तोकाऽदिभ्यः' सूत्र से पंचमी विभक्ति के लोप का निषेध।

कृच्छ्र ङसि आगत

'टाङसिङसामिनात्स्याः' सूत्र से ङसि को आत् आदेश

कृच्छ्र आत् आगत

रूप बना कृच्छ्रादागत

प्रथमा विभक्ति एक वचन में 'सु'। विभक्ति सम्बन्धी कार्य करने पर रूप बना।
'कृच्छ्रादागतः'

11.5 षष्ठी तत्पुरुष समास

षष्ठी – षष्ठ्यन्त पद का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास षष्ठी तत्पुरुष समास कहलात है। उदाहरणार्थ –

राजपुरुषः

राज्ञः पुरुषः लौ. वि.

राजन् ङस् पुरुष सुँ अलौ. वि.

राजन् ङस् इस षष्ठ्यन्त सुबन्त का पुरुष सुँ इस सुबन्त के साथ 'षष्ठी' सूत्र से विकल्प से षष्ठी तत्पुरुष समास। समासविधायक सूत्र में षष्ठी प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य राजन्ङस् की उपसर्जन संज्ञा व पूर्व निपात।

राजन् ङस् पुरुष सुँ

कृत्तद्धित समासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा व सुपोधातु... से प्रातिपदिक के सुप् का लोप।

राजन् पुरुष

न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से प्रातिपदिक के नकार का लोप करने पर

राज पुरुष

प्रथमा विभक्ति एक वचन में सुँ प्रत्यय

राजपुरुष सुँ

सुँ के उकार अनुबन्ध का लोप, सकार को रूँत्व तथा रूँत्व को विसर्ग आदेश करने पर प्रयोग सिद्ध हुआ।

राजपुरुषः

11.6 सप्तमी तत्पुरुष समास

सप्तमी शौण्डैः – सप्तम्यन्त सुबन्त शौण्ड आदि सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास सप्तमी तत्पुरुष समास कहलाता है। उदाहरणार्थ –

अक्षशौण्डः

अक्षेषु शौण्डः इति लौकिक विग्रह

अक्ष सुप् शौण्ड सुँ		अलौकिक विग्रह

सप्तम्यन्त सुबन्त अक्षसुप् का सुबन्त शौण्ड के साथ सप्तमी शौण्डैः सूत्र से सप्तमी तत्पुरुष समास। समास विधायक सूत्र में प्रथमान्त पद के बोध्य अक्ष की उपसर्जन संज्ञा व पूर्व निपात। कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा व सुपोधातु .... सूत्र से प्रातिपदिक के सुप् का लोप

अक्ष शौण्ड

प्रथमा विभक्ति एक वचन में सुँ प्रत्यय। विसर्ग विषयक कार्य करने पर रूप सिद्ध हुआ।
अक्षशौण्डः

ध्वाङ्क्षेण क्षेपे 2/1/41

निन्दा गम्यमान होने पर ध्वाङक्ष (कौवा) वाचक सुबन्तों के साथ सप्तम्यन्त सुँबन्त तत्पुरुषसमास को प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ –

तीर्थघ्वाङ्क्षः		तीर्थे घ्वाङ्क्ष इव

(तीर्थ में पहुँचकर जैसे कौवा बहुत देर तक नहीं ठहरता वैसे जो विद्यार्थी गुरूकुल आदि में देर तक न ठहरे उसे तीर्थध्वाङ्क्ष आदि कहा जाता है। इससे विद्यार्थी की अस्थिरताजन्य निन्दा व्यक्त होती है।)

तीर्थध्वाङ्क्ष

तीर्थे ध्वाङ्क्ष इव

तीर्थ ङि ध्वाङ्क्ष सुँ

ध्वाङ्क्षेण क्षेपे सूत्र से ध्वाङ्क्ष सुबन्त का सप्तम्यन्त सुबन्त तीर्थ ङि के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास। कृत्तद्धित.......सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुपोधातु........ सूत्र से प्रातिपदिक के सुप् का लोप

तीर्थ घ्वाङ्क्ष

उपसर्जन संज्ञा, पूर्व निपात। प्रथमा एकवचन अर्थ में सुँ प्रत्यय। विसर्ग विषयक कार्य करने पर रूप सिद्ध हुआ।

तीर्थघ्वाङ्क्षः

11.8 बोध–प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए –
   - क. कर्तृकरणे कृता बहुलम्
   - ख. पंचम्याः स्तोकादिभ्यः
   - ग. पंचमी भयेन
   - घ. षष्ठी
   - ड. सप्तमी शौण्डैः
2. निम्नलिखित समस्त पदों की सिद्धि कीजिए –
   1. कृष्णश्रितः

2. हरित्रातः

3. यूपदारू

4. गोरक्षितः

5. द्विजार्थः सूपः

11.9 उपयोगी पुस्तकें

1. लघु सिद्धान्त कौमुदी 'भैमी व्याख्या' पं. भीमसेन शर्मा (समास प्रकरण)
2. लघु सिद्धान्त कौमुदी, पं. महेश सिंह कुशवाह
3. लघु सिद्धान्त कौमुदी, पं. धरानन्द शास्त्री
4. लघु सिद्धान्त कौमुदी, डॉ. अर्कनाथ चौधरी

11.10 बोध–प्रश्नों के उत्तर

1 क. द्रष्टव्य 11.2 इकाई

ख. द्रष्टव्य 11.4 इकाई

ग. द्रष्टव्य 11.4 इकाई

घ. द्रष्टव्य 11.5 इकाई

ङ. द्रष्टव्य 11.6 इकाई

2. द्रष्टव्य 11.1 से 11.4 इकाई पर्यन्त

इकाई—12

कर्मधारय समास, समानाधिकरण समास

कर्मधारय समास—सम्बन्धी सूत्रों की व्याख्या तथा उदाहरण, समस्त पदों की समास विग्रह प्रक्रिया का सूत्रोल्लेख पूर्वक निरूपण

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

यह इकाई समास प्रकरण से सम्बद्ध है। इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त —

1. आप यह जान जायेंगे कि कर्मधारय तत्पुरुष समास का ही एक भेद है।
2. समानाधिकरण तत्पुरुष समास को कर्मधारय संज्ञा दी जाती है।
3. विशेषण और विशेष्य में जो समास होता है उसे कर्मधारय के नाम से जाना जाता है तथा कर्मधारय समास के अन्य समस्त बिन्दु इस इकाई के माध्यम से व्याख्यात होंगे।

12.1 प्रस्तावना

1. संस्कृतभाषा रूपी दुर्ग की बाह्य परिखाओं के नाम से प्रसिद्ध सन्धि और समास को पार किये (अच्छी तरह से समझे) बिना संस्कृत भाषा को शास्त्रीय एवं व्यावहारिक दृष्टि से चरितार्थ कर पाना सम्भव नहीं है। इसका कारण यही है कि संस्कृत वाङ्मय सन्धि और समास के अभाव में स्वाभाविकता को प्राप्त नहीं हो पाता है और स्वाभाविकता के अभाव में लोक ग्राह्य नहीं हो पाता है। 'लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम्' महाभाष्यकार पतञ्जलि के इस वचन के अनुसार व्याकरणशास्त्र के ज्ञान का मुख्य प्रयोजन लाघव है। इनमें समास का बोध करने के लिए उन पदों एवं पदों में निहित तत्तद् विभक्तियों का ज्ञान आवश्यक होता है अत: प्रकृत प्रकरण के माध्यम से समास की विशेषताओं का बोध एवं उनके शास्त्रीय तथा व्यावहारिक संस्कृत में चमत्कृति पैदा करना है।

2. इस कर्मधारय समास से पूर्व समास से सम्बन्धित इकाइयों के प्रारम्भ में भूमिका के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया ही गया है कि सम् उपसर्गपूर्वक अस् धातु से घञ् प्रत्यय एवं उपधा में विद्यमान अवर्ण के स्थान पर वृद्धि करने पर समास शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है – संक्षेप या संक्षिप्तीकरण। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि जब दो या दो से अधिक पदों के मिलने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित विभक्तियों का लोप हो जाता है तथा वे दोनों पद मिलकर एकपद बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है –

पदानां लुप्यते यत्र प्राय: स्वा: स्वा: विभक्तय:।
पुनरेकपदीभाव: समास उच्यते तदा॥

यह समास पाँच प्रकार का होता है –

1. **केवल समास :** समास होने पर भी शास्त्र में कोई विशेष संज्ञा न किये जाने पर केवल समास होता है उदाहरणत: भूतपूर्व:।

2. **अव्ययीभाव समास :** अनव्ययम् अव्ययं भवति इति अव्ययीभाव:। इस समास में प्राय: पूर्वपद (अव्यय) की प्रधानता होने पर उत्तरपद भी अव्यय के रूप में बना लिया जाता है उदाहरण – अधिहरि, उपकृष्णम् आदि।

3. **तत्पुरुषसमास :** इस तत्पुरुष तथा इसके भेद कर्मधारय के सम्बन्ध में प्रकृत प्रकरण में विवेचन किया जायेगा।

4. **बहुव्रीहिसमास :** इस समास में प्राय: समस्यमान (मिलने वाले) पदों से भिन्न किन्तु उससे सम्बद्ध किसी अन्य पद की प्रधानता होती है। उदाहरणत: – पीताम्बर: – पीतम् अम्बरं यस्य स:।

5. **द्वन्द्व समास :** 'च' के अथ में किये जाने वाले इस समास में प्राय: सभी पदों के अर्थों की प्रधानता होती है। उदाहरणत: हरिहरौ, हरिहरगुरव:।

कर्मधारय चूँकि तत्पुरुष समास का भेद है इसलिए सर्वप्रथम तत्पुरुष समास से सम्बन्धित जानकारी होना आवश्यक है।

'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधान: तत्पुरुष:' इस लक्षण के अनुसार जिन दो या दो से अधिक पदों में प्राय: उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता (मुख्यता) का बोध होता है वह तत्पुरुष समास कहलाता है। यहाँ प्रयुक्त तत्पुरुष शब्द दो तरह से व्याख्यान के योग्य है –

1. तस्य पुरुष: इति तत्पुरुष: अर्थात् उसका (स्वामी का) सेवक।

2. स चासौ पुरुष: इति तत्पुरुष: अर्थात् वह पुरुष।

इनमें प्रथम अर्थ के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि इसमें पूर्वपद एवम् उत्तरपद में भिन्न-भिन्न विभक्तियों का प्रयोग किया गया है। अत: इसे **व्यधिकरण** या **वैयधिकरण** तत्पुरुष कहा जाता है और यह व्यधिकरण तत्पुरुष द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति पर्यन्त अलग-अलग सूत्रों से व्यवस्थित किया जाता है।

द्वितीय अर्थ पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पदों में समान अर्थात् एक ही तरह की विभक्ति का प्रयोग किया गया है। इस तरह यह **समानाधिकरण** तत्पुरुष कहा जाता है। इसके अन्तर्गत कर्मधारय समास तथा उसके भेद द्विगु आदि समास का ग्रहण किया जाता है। प्रसङ्गत: कर्मधारय समास से सम्बन्धित विवेचन इस प्रकार है –

12.2 तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः (पा.सू. 1। 2। 42॥)

यह कर्मधारयसंज्ञाविधायक सूत्र है। इसके अनुसार समानाधिकरण तत्पुरुष समास को कर्मधारय समास कहते हैं। कर्मधारय पद में 'कर्म' शब्द क्रिया अर्थ का वाचक है। इस तरह इस समास में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद एक ही क्रियामें अन्वित (युक्त) होते हैं। समानाधिकरण का अर्थ है- सभी पदों में एक ही तरह की विभक्तियों का प्रयोग होना। इस कर्मधारय संज्ञा के बाद उससे सम्बन्धित फल का कथन करने के लिए अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

12.2.1 विशेषणं विशेष्येण बहुलम् (पा.सू. 2। 1। 57॥)

विशेषणवाचक शब्द विशेष्य वाचक शब्द के साथ बहुलतया मिलता है।

विशेषण शब्द का अर्थ है – विशिष्यते अनेन इति विशेषणम् अर्थात् जिसके द्वारा किसी वस्तु की विशेषता बतलाई जाती है उसे विशेषण कहते हैं। इस विशेषण को भेदक अथवा व्यावर्तक भी कहा जाता है। इसका कारण यह है कि वह स्वयं के द्वारा किसी के वैशिष्ट्य का अङ्कन करता है। इसी तरह यह विशेषण जिसकी विशेषता बतलाता है उसे विशेष्य, भेद्य अथवा व्यावर्त्य कहा जाता है। इन विशेषण एवं विशेष्य दोनों में से विशेष्य प्रधान और विशेषण अप्रधान होता है। जैसा कि स्पष्ट है-

भेद्यं विशेष्यमित्याहुर्भेदकं तु विशेषणम्।
प्रधानं तु विशेष्यं स्यादप्रधानं विशेषणम्॥

सूत्र में पठित बहुल शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है – बहून् अर्थात् लाति इति बहुलम्। यह बहुल शब्द चार अर्थों में दिखाई पड़ता है। जैसा कि प्रसिद्ध है –

क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति॥

अर्थात् 1. **क्वचित् प्रवृत्ति :–** 'बहुलम्' से सम्बन्धित कार्य कहीं न होने योग्य स्थान पर भी हो जाता है।

2. **क्वचिद् अप्रवृत्ति :–** यह कार्य उपयुक्त स्थान पर भी कभी नहीं होता है।

3. **क्वचिद् विभाषा :–** यह कार्य कहीं विकल्प से हो जाता है।

4. **क्वचिद् अन्यद् एव :–** कहीं कुछ अन्य भी हो जाता है।

उदाहरण – नीलोत्पलम् – नीलम् उत्पलम् अथवा नीलञ्च तदुत्पलम्। लौकिक विग्रह।
नील सु उत्पल सु अलौकिक विग्रह।

यह विकल्प का उदाहरण है यहाँ 'नील' शब्द विशेषण तथा 'उत्पल' शब्द विशेष्य है। अतः 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्र से कर्मधारय समास, 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होकर 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से दोनों पदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है। चूँकि नील शब्द अर्थात् विशेषण समासविधायक सूत्र में प्रथमा से निर्दिष्ट है अतः उसकी उपसर्जन संज्ञा करके पूर्वप्रयोग कर दिया जाता है। 'नील उत्पल' इस दशा में 'आद्गुणः' सूत्र से गुण रूप एकादेश करके 'नीलोत्पलं' शब्द बनता है। 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' सूत्र के अनुसार तत्पुरुष समास में पर (उत्तर) पद की तरह लिङ्गविधान के नियम से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय, 'अतोऽम्' से अम् आदेश एवं पूर्वरूप करने पर 'नीलोत्पलम्' प्रयोग निष्पन्न होता है।

इसी तरह –

रक्तोत्पलम्	रक्तं च तदुत्पलम्	–	लौकिक विग्रह
	रक्त सु उत्पल सु	–	अलौकिक विग्रह
महावृक्षः	महांश्चासौ वृक्षः	–	लौकिक विग्रह
	महत् सु वृक्ष सु	–	अलौकिक विग्रह
कृष्णचतुर्दशी	कृष्णा चासौ चतुर्दशी	–	लौकिक विग्रह
	कृष्णा सु चतुर्दशी सु	–	अलौकिक विग्रह
पूर्ववैयाकरणाः	पूर्वे च ते वैयाकरणाः	–	लौकिक विग्रह
	पूर्व जस् वैयाकरण जस्	–	अलौकिक विग्रह
क्षुद्रजन्तवः	क्षुद्राश्च ते जन्तवः	–	लौकिक विग्रह
	क्षुद्र जस् जन्तु जस्	–	अलौकिक विग्रह
वृद्धव्याघ्रः	वृद्धश्चासौ व्याघ्रः	–	लौकिक विग्रह
	वृद्ध सु व्याघ्र सु	–	अलौकिक विग्रह
निर्मलगुणाः	निर्मलाश्च ते गुणाः	–	लौकिक विग्रह
	निर्मल जस् गुण जस्	–	अलौकिक विग्रह
सिताम्भोजम्	सितञ्च तदम्भोजम्	–	लौकिक विग्रह
	सित सु अम्भोज सु	–	अलौकिक विग्रह

यहाँ 'बहुल' शब्द का ग्रहण होने से 'कृष्णसर्पः' में नित्य समास होने से स्वपद विग्रह नहीं हुआ है। इसी प्रकार कहीं समास की प्रवृत्ति नहीं होती है। यथा – रामो जामदग्न्यः।

किं क्षेपे – (पा.सू. 2। 1। 64)

'क्षेप' शब्द निन्दार्थक है। इस तरह निन्दा अर्थ का बोध होने पर 'किम्' अव्यय समानाधिकरण प्रातिपदिक के साथ मिलता है और वह तत्पुरुष समास कहलाता है। उदाहरण –

कुराजा– कुत्सितः राजा – लौकिक विग्रह

कु राजन् सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ प्रकृत सूत्र से निन्दार्थक किम् अव्यय का राजन् शब्द के साथ समास, प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्तिलोप, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा करके प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय, उपधा में विद्यमान 'अन्' के अकार को दीर्घ, सुप्रत्यय का हल्ङ्यादिलोप एवं 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से न का लोप करने पर 'कुराजा' शब्द निष्पन्न होता है। इसी तरह किंसखा, किंप्रभुः।

विशेष : यहाँ उस राजा को किंराजा (निन्दित राजा) कहा जाता है, जो अत्यधिक ऐश्वर्यसम्पन्न होकर भी प्रजा का समुचित पालन नहीं करता है।

12.2.2 उपमानानि सामान्यवचनैः (पा.सू. 2। 1। 54)

उपमानवाचक पूर्वपद का सामान्य गुण धर्म वाचक उत्तरपद के साथ समास होता है। उपमान का अर्थ है – जिससे किसी अन्य वस्तु की समानता प्रदर्शित की जाए।

इसी तरह जिस वस्तु की समानता प्रदर्शित की जाती है वह उपमेय है। सामान्यवचन शब्द का अर्थ है – समान धर्म।

उदाहरण– घनश्याम: (श्रीकृष्ण:) घन इव श्याम: – लौकिक विग्रह

घन सु श्याम सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ घन (बादल) उपमान है तथा श्रीकृष्ण उपमेय है। इन दोनों में श्यामता समान धर्म है। यह श्याम शब्द पहले श्यामगुण का वाचक है और बाद में श्यामगुण वाले व्यक्ति का।

उपर्युक्त विग्रह वाक्य के आधार पर 'उपमानानि सामान्यवचनै:' सूत्र के द्वारा समास, प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्तिलोप आदि पूर्ववत् करके पुन: प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग कर देने पर 'घनश्याम:' प्रयोग निष्पन्न होता है।

12.2.3 इसी तरह –

कर्पूरगौर:	कर्पूर इव गौर:	–	लौकिक विग्रह
	कर्पूर सु गौर सु	–	अलौकिक विग्रह
दुग्धधवलम्	दुग्धमिव धवलम्	–	लौकिक विग्रह
	दुग्ध सु धवल सु	–	अलौकिक विग्रह
सुधाकरमनोहरम्	सुधाकर इव मनोहरम्	–	लौकिक विग्रह
	सुधाकर सु मनोहर सु	–	अलौकिक विग्रह
नवनीतकोमला	नवनीत इव कोमला	–	लौकिक विग्रह
	नवनीत सु कोमल सु	–	अलौकिक विग्रह
हेमरुचिरा	हेम इव रुचिरा	–	लौकिक विग्रह
	हेम सु रुचिर सु	–	अलौकिक विग्रह
गजस्थूल:	गज इव स्थूल	–	लौकिक विग्रह
	गज सु स्थूल सु	–	अलौकिक विग्रह
शिरीषमृद्वी	शिरीषमिव मृद्वी	–	लौकिक विग्रह
	शिरीष सु मृद्वी सु	–	अलौकिक विग्रह
काककृष्ण:	काक इव कृष्ण:	–	लौकिक विग्रह
	काक सु कृष्ण सु	–	अलौकिक विग्रह

दण्डदीर्घ:, समुद्रगम्भीर:, नीरदश्याम:।

12.3 उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे (पा.सू. 2। 1। 56)

व्याघ्रआदि उपमानवाचक शब्द के साथ उपमेय वाची शब्दों का सामान्य धर्म से भिन्न प्रयोग की दशा में समास होता है। उदाहरण –

पुरुषव्याघ्रः पुरुषः व्याघ्र इव – लौकिक विग्रह

पुरुष सु व्याघ्र सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ प्रकृत सूत्र से उपमेय 'पुरुष' शब्द का उपमान 'व्याघ्र' शब्द के साथ समास, प्रातिपदिकसंज्ञा एवं दोनों विभक्तियों का लोप उपमेयवाचक 'पुरुष' शब्द की उपसर्जन संज्ञा करके पूर्वप्रयोग, पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा, प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्वविसर्ग करने पर पुरुषव्याघ्रः प्रयोग निष्पन्न होता है।

विशेष – यहाँ सादृश्य का कथन करने वाले शौर्य रूप साधारण धर्म का ग्रहण न होने से समास किया गया है।

12.3.1 इसी तरह –

करकमलम्	करम् कमलम् इव	–	लौकिक विग्रह
	कर सु कमल सु	–	अलौकिक विग्रह
चरणाम्बुजम्	चरणम् अम्बुजम् इव	–	लौकिक विग्रह
	चरण सु अम्बुज सु	–	अलौकिक विग्रह
नृसिंहः	ना सिंह इव	–	लौकिक विग्रह
	नृ सु सिंह सु	–	अलौकिक विग्रह
नरकुञ्जरः	नरः कुञ्जर इव	–	लौकिक विग्रह
	नृ सु कुञ्जर सु	–	अलौकिक विग्रह
मुखचन्द्रः	मुखम् चन्द्र इव	–	लौकिक विग्रह
	मुख सु चन्द्र सु	–	अलौकिक विग्रह
नृसोमः	ना सोम इव	–	लौकिक विग्रह
	नृ सु सोम सु	–	अलौकिक विग्रह

12.4 बोध-प्रश्न

1. कर्मधारय समास एवं उसके भेद लक्षण उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।
2. अधोलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए –
   (क) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
   (ख) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
   (ग) उपमानानि सामान्यवचनैः
   (घ) उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे
3. समानाधिकरण एवं व्यधिकरण पदों के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उनके एक-एक उदाहरण प्रदर्शित कीजिये।
4. अधोलिखित उदाहरण वाक्यों में विग्रह प्रदर्शित कीजिये –

(1) नीलोत्पलम्

(2) कुराजा

(3) पुरुषव्याघ्रः

(4) सुधाकरमनोहरम्

(5) चरणाम्बुजम्

12.5 उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – भैमी व्याख्या सहित – पं. भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली

2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जयपुर

3. लघुसिद्धान्तकौमुदी– महेश कुशवाहा, वाराणसी

4. प्रौढ़ रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, वाराणसी

12.6 बोध–प्रश्नों के उत्तर

1. द्रष्टव्य भाग संख्या 12.2 में।

2. द्रष्टव्य भाग संख्या 12.2.1 से 12.2.3 तक में।

3. द्रष्टव्य भाग संख्या 12.2 से 12.3 तक में।

4. द्रष्टव्य भाग संख्या 12.2 से 12.3 तक में।

इकाई—13

द्विगु, नञ् तत्पुरुष तथा उपपद तत्पुरुष समास

उपर्युक्त समासों से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या तथा उदाहरण, समस्त—पदों की समास विग्रह प्रक्रिया का सूत्रोल्लेख पूर्वक निरूपण

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

इस समास में समानाधिकरण के साथ पूर्व पद के संख्यावाची होने से सम्बन्धित विशेष विषय को स्पष्टीकरण किया जायेगा, जिससे अध्येताओं को अनुवाद एवं वाक्यप्रयोग से सम्बन्धित विषय का ज्ञान होगा।

13.1 प्रस्तावना

तत्पुरुष समास समनाधिकरण एवं व्यधिकरण भेद से दो प्रकार का होता है – यह पूर्व में स्पष्ट किया गया है। इनमें व्यधिकरण तत्पुरुष के उदाहरण द्वितीया से लेकर सप्तमी तत्पुरुष के रूप में वर्णित किया गया है। समानाधिकरण तत्पुरुष के उदाहरण तत्पुरुष के भेद कर्मधारय तथा कर्मधारय के भेद 'द्विगु' के अन्तर्गत प्रदर्शित किये गये हैं। इनमें जहाँ कर्मधारय में विशेषण विशेष्य भाव रूप विशेषता से युक्त समानाधिकरण है वहीं द्विगु समास के अन्तर्गत पूर्वपद संख्यावाची के रूप में होकर समानाधिकरण अर्थात् समान विभक्ति वाला होता है।

13.2 सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः (पा.सू. 2। 1 । 51) द्विगु संज्ञा

'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' इस सूत्र में जो तद्धितार्थ, उत्तरपद तथा समाहार नामक तीन प्रकार का समास कहा जाता है, यदि उसका पूर्वपद संख्यावाचक हो तो वह द्विगुसमास कहलाता है।

तात्पर्य यह है कि तद्धितार्थ विषयक (पञ्चकपालः), उत्तरपद परे रहते (पञ्चगवधनः) तथा समाहार (पञ्चगवम्) में संख्यावाचक पूर्वपद होने पर द्विगुसमास होता है।

13.3 तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च (पा.सू. 2। 1। 5) द्विगु समास का विधायक

तद्धित प्रत्यय के अर्थ का विषय होने पर, उत्तरपद परे होने पर अथवा समाहार अर्थात् समूह अर्थ का कथन होने पर दिशा एवं संख्यावाचक शब्द का समानाधिकरण सुबन्त शब्द के साथ समास होता है।

तद्धित प्रत्ययार्थ – पौर्वशालः	पूर्वस्यां शालायां भवः	लौकिक विग्रह
	पूर्वा ङि शाला ङि भव सु	अलौकिक विग्रह

यहाँ भव अर्थ में 'दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः' सूत्र से तद्धित 'ञ' प्रत्यय का विधान होने की स्थिति में प्रकृत सूत्र के द्वारा समास, प्रातिपदिकसंज्ञा करके विभक्तियों का लोप 'पूर्वा शाला' इस स्थिति में 'सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः' वार्तिक से सर्वनामबोधक पूर्वा शब्द को पुंवद्भाव, 'पूर्व शाला' इस दशा में दिक्पूर्व.... सूत्र से 'ञ' प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से ञित् मानकर आदिवृद्धि पौर्वशाला अ इस स्थिति में 'यचि भम्' से भसंज्ञा करके 'यस्येति च' सूत्र से 'आ' का लोपः पौर्वशाल शब्द से प्रातिपदिक संज्ञा होकर सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग होने पर पौर्वशालः प्रयोग निष्पन्न होता है। इसी प्रकार – आपरशालः अपरस्यां शालायां भवः।

उत्तरपद परे होने से सम्बन्धित उदाहरण –

पञ्चगवधनः	पञ्च गावः धनं यस्य	लौकिक विग्रह
	पञ्चन् जस गो जस् धन सु	अलौकिक विग्रह

इस त्रिपद बहुव्रीहि में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र द्वारा बहुव्रीहि समास प्रातिपदिक संज्ञा एवं तीनों विभक्तियों का लुक् अनन्तर पञ्चन् एवं गो शब्द का 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' 'द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम्' की सहायता से नित्य समास (तत्पुरुष), उपसर्जन संज्ञा करके पञ्चन् शब्द का पूर्व प्रयोग 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से नलोप 'पञ्चगोधन' इस स्थिति में 'गोरतद्धितलुकि' सूत्र से समासान्त 'टच्' प्रत्यय अनुबन्ध लोप 'पञ्च गो अ धन' इस स्थिति में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ के स्थान पर 'अव्' आदेश 'पञ्च ग् अव् अ धन' की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा, प्रथमा एकवचन सु प्रत्यय एव रुत्व विसर्ग करने पर 'पञ्चगवधनः' प्रयोग निष्पन्न होता है।

13.4 द्विगु के सामान्य नियम

13.4.1 द्विगुरेकवचनम् (पा.सू. 2। 4 । 1)

द्विगु समास के समाहार अर्थ में एकवचन (एक अर्थ का बोध) होता है।

13.4.2 स नपुंसकम् (पा.सू. 2। 4। 17)

द्विगु और द्वन्द्व समास में समाहार अर्थ में नपुंसक लिङ्ग होता है।

उदाहरण –

पञ्चगवम् –	पञ्चानां गवां समाहारः	–	लौकिक विग्रह

पञ्चन् आम् गो आम् – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' सूत्र की सहायता से 'संख्यापूर्वो द्विगुः' सूत्र से द्विगुसमास, प्रातिपदिक संज्ञा करके दोनों विभक्तियों का लोप, 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ' से 'न्' का लोप 'पञ्च' शब्द की उपसर्जनसंज्ञा करके पूर्वप्रयोग, 'पञ्च गो' इस दशा में 'गोरतद्धितलुकि' सूत्र से समासान्त टच् (अ) प्रत्यय, अनुबन्ध लोप 'पञ्च गो अ' 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ओ को 'अव्' आदेश 'पञ्चगव' इस स्थिति में 'द्विगुरेकवचनम्' सूत्र के अनुसार प्रथमा विभक्ति एकवचन में सु प्रत्यय 'स नपुंसकम्' से नपुंसकलिङ्ग की व्यवस्था होने से सु प्रत्यय के स्थान पर अम् आदेश एवं 'अमि पूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप एकादेश करने पर पञ्चगवम् प्रयोग निष्पन्न होता है।

13.4.3 उदाहरण तथ विग्रह

इसी तरह –

पञ्चपात्रम्–	पञ्चानां पात्राणां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	पञ्चन् आम् पात्र आम्	–	अलौकिक विग्रह
त्रिभुवनम्–	त्रयाणां भुवनानां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	त्रि आम् भुवन आम्	–	अलौकिक विग्रह
चतुर्युगम्–	चतुर्णां युगानां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	चतुर् आम् युग आम्	–	अलौकिक विग्रह
पञ्चग्रामम्–	पञ्चानां ग्रामाणां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	पञ्चन् आम् ग्राम आम्	–	अलौकिक विग्रह

जिस द्विगु समास में उत्तरपद अकारान्त होता है उसका स्त्रीलिङ्ग में ङीप् आदि प्रत्यय करके प्रयोग किया जाता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि पात्र आदि शब्द के भी अकारान्त होने से स्त्रीलिङ्ग की प्राप्ति होती है। किन्तु 'पात्राद्यन्तस्य न' वार्तिक से निषेध कर दिया जाता है। उदाहरण –

त्रिलोकी –	त्रयाणां लोकानां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	त्रि आम् लोक आम्	–	अलौकिक विग्रह
पञ्चपूली–	पञ्चानां पूलानां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	पञ्चन् आम् पूल आम्	–	अलौकिक विग्रह
अष्टाध्यायी–	अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	अष्टन् आम् अध्याय आम्	–	अलौकिक विग्रह
पञ्चवटी–	पञ्चानां वटानां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	पञ्चन् आम् वट आम्	–	अलौकिक विग्रह

इसी प्रकार यदि द्विगु समास का उत्तरपद आकारान्त हो तो विकल्प से स्त्रीलिङ्ग अर्थात् ईकारान्त होता है।

उदाहरण –

पञ्चखट्वी, पञ्चखट्वम्। पञ्चानां खट्वानां समाहारः

त्रिशालम्, त्रिशाली। चतु:शालम् चतु:शाली

13.5 अन्य तत्पुरुष समास

नञ् समास –

13.5.1 नञ् (पा.सू. 2। 2। 6)

'नञ्' अव्यय का सुबन्त अर्थात् प्रातिपदिक के साथ समास होता है। 'नञ्' निषेधार्थक अव्यय है। इसमें 'ञ्' का अनुबन्धलोप (हलन्त्यम्) होकर 'न' शेष रहता है।

नलोपो नञः (पा.सू. 6। 3। 72)

बाद में उत्तरपद के दिखाई पड़ने पर नञ् के नकार (न्) का लोप हो जाता है।

अब्राह्मणः न ब्राह्मणः – लौकिक विग्रह

न ब्राह्मण सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ नञ् सूत्र से समास, पूर्ववत् प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति लोप करके 'न ब्राह्मण' इस दशा में 'नलोपो नञः' सूत्र से न् का लोप, 'अब्राह्मण' इस स्थिति में पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा, प्रथमा विभक्ति एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग करने पर 'अब्राह्मणः' प्रयोग निष्पन्न होता है।

इसी तरह –

अज्ञः न ज्ञः – लौकिक विग्रह

न ज्ञ सु – अलौकिक विग्रह

असाधुः न साधुः – लौकिक विग्रह

न साधु सु – अलौकिक विग्रह

अपण्डितः न पण्डितः – लौकिक विग्रह

न पण्डित सु – अलौकिक विग्रह

अपापः, अधर्मः, असारः, अकृपा, अविवेकः, अयोग्यः।

तस्मान्नुडचि (पा.सू. 6। 3। 73)

नञ् के नकार का लोप हो जाने पर उससे पश्चाद्वर्ती अजादि पद को नुट् आगम होता है।

पूर्व में नञ् के नकार का लोप बताया गया है, अतः उत्तरपद के विद्यमान होने पर प्रकृत सूत्र से नुट् आगम होता है। आगम और आदेश भिन्न-भिन्न हैं। इनमें आगम मित्र के सदृश तथा आदेश शत्रु के समान होता है – **मित्रवदागमः शत्रुवदादेशः।**

अनश्व : न अश्वः – लौकिक विग्रह

न अश्व सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'नञ्' सूत्र से समास, प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति लोप 'न अश्व' इस स्थिति में 'नलोपो नञः' सूत्र से नलोप (न्)

'अ अश्व' इस स्थिति में 'आद्यन्तौ टकितौ' सूत्र की सहायता से अश्व शब्द के अकार से पूर्व नुट् (न्) आगम, अ न् अश्व = अनश्व शब्द की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग कर देने पर 'अनश्वः' प्रयोग निष्पन्न होता है।

इसी तरह –

अनद्यतनम् न अद्यतनम् लौकिक विग्रह

न अद्यतन सु अलौकिक विग्रह

अनात्मा न आत्मा लौकिक विग्रह

न आत्मन् सु अलौकिक विग्रह

अनार्यः, अनाशा, अनीश्वरः, अनीहा, अनुत्साहः, अनेकः, अनैक्यम्, अनौत्सुक्यम्, अनृणी, अनुक्त्वा।

13.6 उपपद तत्पुरुष समास

तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (पा. सू. 3। 1। 92)

'कर्मण्यण्' सूत्रस्थ 'कर्मणि' इस सप्तम्यन्त पद से बोध्य कुम्भ आदि को कहने वाले शब्दों की उपपदसंज्ञा होती है। (इस स्थिति में ही प्रत्ययों की विधान होता है)

उपपद शब्द का अर्थ है – उप समीपोच्चारितं पदमुपपदम् अर्थात् समीप में उच्चारित पद। सप्तमीस्थ शब्द का अर्थ है – सप्तमी विभक्तियुक्त शब्द। इस तरह सप्तमी विभक्ति से युक्त पद के द्वारा समीप में उच्चारित जिस कुम्भ आदि का बोध होता है उसकी उपपद संज्ञा होती है।

उपपदमतिङ् (पा. सू. 2। 2। 19)

तिङ् प्रत्यय (धातुओं के तिप् तस् झि आदि मूल प्रत्यय) से भिन्न अर्थात् कृत् प्रत्यय से सम्बन्धित होने पर उपपद वाचक सुबन्त प्रातिपदिक का समर्थ शब्द के साथ नित्य समास होता है। उदाहरण –

कुम्भकारः कुम्भं करोति – लौकिक विग्रह

यहाँ 'तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्' सूत्र से कर्म रूप 'कुम्भ' शब्द के उपपद संज्ञक होने से कृ धातु से 'कर्म ण' सूत्र से अण् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप 'अचो ञ्णिति' सूत्र से णित् मानकर ऋ के स्थान पर आ वृद्धि एवं रपर, कुम्भ क् आर् अ = कुम्भकार शब्द में कुम्भस्य कार, कुम्भ ङस् कार इस अलौकिक विग्रह में उपपदमतिङ् से समास, प्रातिपदिकसंज्ञा करके विभक्ति लोप, कुम्भकार शब्द की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग करने पर कुम्भकारः प्रयोग निष्पन्न होता है।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि 'कार' शब्द में 'कृ + अण्' 'इस तिङ् से भिन्न कृत् प्रत्यय के होने पर ही समास हुआ है। इसी तरह –

सूत्रकारः, वार्तिककारः, भाष्यकारः स्वर्णकारः लौहकारः आदि।

13.7 बोधप्रश्न –

1. द्विगु समास का लक्षण प्रस्तुत करते हुए उसके उदाहरण को स्पष्ट कीजिये।
2. अधोलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिये –
   (1) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च
   (2) स नपुंसकम्
   (3) नञ्
   (4) तस्मान्नुडचि
   (5) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्
3. अधोलिखित उदाहरण वाक्यों में विग्रह प्रदर्शित कीजिये –
   (1) पञ्चगवधनः (2) त्रिभुवनम् (3) अष्टाध्यायी
   (4) अज्ञः (5) अनद्यतनम् (6) वार्तिककारः

13.8 उपयोगी पुस्तकें –

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – भैमी व्याख्या सहित – पं. भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जयपुर
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी– महेश कुशवाहा, वाराणसी
4. प्रौढ़ रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, वाराणसी

13.9 बोध–प्रश्नों के उत्तर –

1. द्रष्टव्य भाग संख्या 13.2 में।

2 एवं 3 के उत्तर विद्यार्थी इकाई से स्वयं जाँच करें।

इकाई–14

बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व समास

उपर्युक्त दोनों समासों से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या तथा उदाहरण, समस्त–पदों की समास विग्रह–प्रक्रिया का सूत्रोल्लेख पूर्वक निरूपण

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

बहुव्रीहि समास – यह भी समास का प्रमुख भेद है। इसमें प्रायः अन्य पद (निर्धारित दो या तीन पदों) से अतिरिक्त पद के अर्थ की प्रधानता होती है। अन्य पदार्थ प्रधान होने के कारण ही इस समास का लिङ्ग और वचन भी वही होता है जो अन्य पद का रहता है। इसके विवेचन का मुख्य उद्देश्य लौकिक एवम् अलौकिक विग्रह वाक्यों का बोध करके प्रवृत्ति निवृत्ति रूप व्यवहार में लाना है।

द्वन्द्व समास – समासों के अन्तर्गत यह भी एक महत्त्वपूर्ण समास है इस द्वन्द्व शब्द को सूत्रकार पाणिनि ने द्वन्द्वं

रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु (सूत्र 8। 1। 15) के अनुसार अनेक अर्थों में निपातन द्वारा ग्रहण किया है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने स्वयं को 'द्वन्द्वः सामासिकस्य च' द्वारा समासों में द्वन्द्व समास कहा है। इस तरह द्वन्द्व के वास्तविक स्वरूप एवं उसके भेदों का विवेचन करना ही प्रमुख उद्देश्य है।

14.1 प्रस्तावना

बहुब्रीहि शब्द में भी चूँकि अन्य पदार्थ के अर्थ की प्रधानता है जिसे सर्वप्रथम समझ कर इससे सम्बन्धित अधिकार सूत्र के अन्तर्गत आने वाले विधि सूत्रों का समुचित ज्ञान करना है।

बहुब्रीहि – बहवः ब्रीहयः यस्य यस्मिन् वा– लौकिक विग्रह (प्रचुर धान्यराशि है जिसमें)

बहु जस् ब्रीहि जस् – अलौकिक विग्रह

इसी प्रकार से सूत्रार्थ के स्पष्टीकरण के साथ तत्तत् उदाहरण वाक्यों का यथाक्रम बोध किया जाना है।

14.2 शेषो बहुव्रीहिः (पा. सू. 2। 2। 23)

यह अधिकार सूत्र है। शेष शब्द का अर्थ है – उक्तादन्यः शेषः। अर्थात् कहे जाने से जो बचा रहता है वह शेष है। इस तरह द्वन्द्व समास से पूर्व प्रथमान्त पदों में होने वाला समास बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

14.3 अनेकमन्यपदार्थे (पा.सू. 2। 2।24)

अनेक प्रथमा विभक्त्यन्त पदों का अन्य पद के अर्थ में विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

बहुव्रीहि समास में प्रायः अन्य पद के अर्थ की प्रधानता दिखाई पड़ती है – अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः। यहाँ पूर्व अथवा उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता न होकर प्रायः अन्य किसी तीसरे पद के अर्थ की प्रधानता दिखाई पड़ती है और वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। इस समास में 'यत्' शब्द की द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक का प्रयोग अन्य पद के अर्थ का कथन करने के लिए किया जाता है। यथा – यम्, येन, यस्मै, यस्मात्, यस्य, यस्मिन्।

14.4 पूर्वनिपात के सूत्र

14.4.1 सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ (पा. सू. 2। 2। 35)

सप्तम्यन्त एवं विशेषण वाचक शब्द का बहुव्रीहि समास में पूर्व प्रयोग होता है।

14.4.2 हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् (पा.सू. 6। 3। 8)

संज्ञा अर्थ के गम्यमान होने पर हलन्त एवं अदन्त शब्दों से परे सप्तमी विभक्ति का लुक् नहीं होता है। उदाहरण –

कण्ठेकालः कण्ठे कालः यस्य – लौकिक विग्रह

कण्ठ ङि काल सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ अकारान्त 'कण्ठ' शब्द के अनन्तर सप्तमी विभक्ति के एकवचन का 'ङि' प्रत्यय विद्यमान है, जिसमें गुण करके 'कण्ठे' शब्द निष्पन्न हुआ है। चूँकि यह सप्तम्यन्त पद है अतः 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' सूत्र से पूर्व प्रयोग किया गया है। इस सप्तम्यन्त के पूर्व प्रयोग के ज्ञापन से यहाँ व्यधिकरण बहुव्रीहि समास किया गया है। तदनन्तर प्रातिपदिक संज्ञा करके विभक्ति लोप प्राप्त है किन्तु 'हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम्' सूत्र से सप्तमी विभक्ति का अलुक् एवं अन्य का लोप 'कण्ठेकाल' शब्द की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, प्रथमा

एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्वविसर्ग कर देने पर 'कण्ठेकाल:' प्रयोग निष्पन्न होता है।

विशेषणपूर्वपद का उदाहरण –

चित्रगु:	चित्रा: गाव: यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	चित्रा जस् गो जस्	–	अलौकिक विग्रह
उरसिलोमा	उरसि लोमानि यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	उरस् ङि लोमन् जस्	–	अलौकिक विग्रह
शरजन्मा	शरेषु जन्म यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	शर ङि जन्म सु	–	अलौकिक विग्रह
अग्रजन्मा	अग्रे जन्म यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	अग्रे जन्म सु	–	अलौकिक विग्रह
इन्दुमौलि:	इन्दु: मौलौ यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	इन्दु सु मौलि ङि	–	अलौकिक विग्रह
चन्द्रमौलि:	चन्द्र: मौलौ यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	चन्द्र सु मौलि ङि	–	अलौकिक विग्रह
दण्डपाणि:	दण्ड: पाणौ यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	दण्ड सु पाणि ङि	–	अलौकिक विग्रह
चक्रपाणि:	चक्रं पाणौ यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	चक्र सु पाणि ङि	–	अलौकिक विग्रह
पद्मनाभ:	पद्मं नाभौ यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	पद्म सु नाभि ङि	–	अलौकिक विग्रह

समानाधिकरण बहुव्रीहि के उदाहरण –

1.	**प्राप्तोदक: (ग्राम:)**	प्राप्तम् उदकं यम्	–	लौकिक विग्रह
		प्राप्त सु उदक सु	–	अलौकिक विग्रह
2.	**ऊढरथ: (अनड्वान्)**	ऊढ: रथ: येन	–	लौकिक विग्रह
		ऊढ सु रथ सु	–	अलौकिक विग्रह
3.	**उपहृतपशु: (रुद्र:)**	उपहृत: पशु: यस्मै	–	लौकिक विग्रह
		उपहृत सु पशु सु	–	अलौकिक विग्रह
4.	**उद्धृतौदना (स्थाली)**	उद्धृतम् ओदनम् यस्या:	–	लौकिक विग्रह
		उद्धृत सु ओदन सु	–	अलौकिक विग्रह

5.	**पीताम्बर: (हरि:)**	पीतम् अम्बरं यस्य	–	लौकिक विग्रह
		पीत सु अम्बर सु	–	अलौकिक विग्रह
6.	**वीरपुरुषक: (ग्राम:)**	वीरा: पुरुषा: यस्मिन्	–	लौकिक विग्रह
		वीर जस् पुरुष जस्	–	अलौकिक विग्रह

यहाँ प्रथम उदाहरण वाक्य में 'शेषो बहुव्रीहि:' के अधिकार में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से अनेक प्रथमान्त के अन्य पद के अर्थ में मिलने से बहुव्रीहि समास, प्रातिपदिक संज्ञा करके विभक्ति का लोप, पुन: प्रातिपदिक संज्ञा करके प्रथमा विभक्ति एकवचन में सुप्रत्यय, 'प्राप्त उदक सु' इस दशा में अकार एवं उकार के स्थान पर गुणरूप एकादेश तथा सुप्रत्यय के स्थान पर रुत्व एवं विसर्ग कर देने पर 'प्राप्तोदक:' प्रयोग निष्पन्न होता है।

द्वितीय एवं तृतीय उदाहरण वाक्यों में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से समास आदि कार्य पूर्ववत् हैं।

चतुर्थ वाक्य में भी पूर्ववत् समास आदि करके पुन: प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय स्त्रीत्वविवक्षा में 'अजाद्यतष्टाप्' से टाप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप 'उद्धृत ओदन आ सु' इस दशा में अकार एवम् ओकार के स्थान पर वृद्धि एकादेश 'उद्धृतौदन आ सु' इस दशा में सवर्ण दीर्घ एवं सु प्रत्यय का हल्ङ्यादि लोप करने पर यह प्रयोग निष्पन्न होता है।

पञ्चम उदाहरण वाक्य में पूर्ववत् समास आदि कार्य, पीत एवं अम्बर शब्दस्थ अकार में सवर्णदीर्घ एकादेश तथा पुन: प्रातिपदिक संज्ञा करके प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग करने पर यह प्रयोग निष्पन्न होता है।

षष्ठ उदाहरण वाक्य में पूर्ववत् 'शेषो बहुव्रीहि:' के अधिकार में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से समास, प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति लोप, 'शेषाद्विभाषा' सूत्र से कप् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, 'वीरपुरुषक' शब्द की पुन: प्रातिपदिकसंज्ञा प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग करने पर 'वीरपुरुषक:' उदाहरण निष्पन्न होता है।

नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:

नञ् के बाद 'अस्ति' अर्थ को कहने वाले प्रथमान्त शब्द का अन्य प्रथमान्त शब्द के साथ विकल्प से समास होता है एवं पूर्वपद में विद्यमान उत्तरपद का विकल्प से लोप हो जाता है। उदाहरण–

अपुत्र: अविद्यमान: पुत्र: यस्य – लौकिक विग्रह

अविद्यमान सु पुत्र सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'न विद्यमान' इस अर्थ में 'अविद्यमान' शब्द का 'पुत्र' शब्द के साथ प्रकृत वार्तिक की सहायता से बहुव्रीहि समास, 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा एवं 'सुपो धातु प्रातिपदिकयो:' से दोनों ही विभक्तियों का लुक् एवं पूर्ववार्तिक से ही नञ् के उत्तर में स्थित 'विद्यमान' पद का विकल्प से लोप 'अपुत्र' इस स्थिति में पुन: प्रातिपदिकसंज्ञा, प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग करने पर 'अपुत्र:', पक्ष में उत्तरपद का लोप न होने पर 'अविद्यमान: पुत्र:' वाक्य बनते हैं। इसी प्रकार–

अनाथ:	अविद्यमान: नाथ: यस्य	–	लौकिक विग्रह
	अविद्यमान सु नाथ सु	–	अलौकिक विग्रह
अकरुण:	अविद्यमाना करुणा यस्य	–	लौकिक विग्रह

	अविद्यमान सु करुणा सु	–	अलौकिक विग्रह
अरोग:	अविद्यमान: रोग: यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	अविद्यमान सु रोग सु	–	अलौकिक विग्रह
अक्रोध:	अविद्यमान: क्रोध: यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
अभार्य:	अविद्यमाना भार्या यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	अविद्यमान सु भार्या सु	–	अलौकिक विग्रह
अकर्मक:	अविद्यमानं कर्म यस्य स:	–	लौकिक विग्रह
	अविद्यमान सु कर्म सु	–	अलौकिक विग्रह
अकाय:	अविद्यमान: काय: यस्य स:	–	लौकिक विग्रह।
	अविद्यमान सु काय सु	–	अलौकिक विग्रह

14.4.3 समासान्त प्रत्यय

द्वित्रिभ्यां ष: मूर्ध्न: (पा.सू. 5। 4। 115)

बहुव्रीहि समास में द्वि और त्रि शब्द के पश्चात् विद्यमान 'मूर्धन्' शब्द से समासान्त 'ष' प्रत्यय होता है।

यहाँ 'ष' प्रत्यय के षकार की इत्संज्ञा एवं लोप की स्थिति में षित् मानकर स्त्रीत्व विवक्षा में 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय किया जाता है। उदाहरण –

द्विमूर्ध: द्वौ मूर्धानौ यस्य – लौकिक विग्रह

द्वि औ मूर्धन औ – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुव्रीहि समास प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति लोप 'द्विमूर्धन्' इस स्थिति में 'द्वित्रिभ्यां ष: मूर्ध्न:' सूत्र से समासान्त 'ष' प्रत्यय 'ष: प्रत्ययस्य' सूत्र से षकार का लोप 'द्विमूर्धन् अ' इस दशा में 'यचि भम्' से द्विमूर्धन् शब्द की भसंज्ञा एवं 'अचोऽन्त्यादि टि' सूत्र से 'अन्' भाग की टिसंज्ञा, 'नस्तद्धिते' सूत्र से टिभाग का लोप, 'द्विमूर्ध' शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा करके प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग करने पर 'द्विमूर्ध:' शब्द निष्पन्न होता है।

इसी प्रकार –

त्रिमूर्ध: त्रय: मूर्धान: यस्य – लौकिक विग्रह

त्रि जस् मूर्धन् जस् – अलौकिक विग्रह

अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्न: (पा. सू. 5। 4। 117)

बहुव्रीहि समास में अन्तर् तथा बहि: शब्दों (अव्ययों) के पश्चात् लोमन् शब्द के विद्यमान होने पर समासान्त अप् प्रत्यय होता है (इस प्रत्यय में 'अ' शेष रहता है)। उदाहरण –

अन्तर्लोम: अन्त: लोमानि यस्य – लौकिक विग्रह

अन्तर् लोमन् जस् – अलौकिक विग्रह

बहिर्लोम: बहि: लोमानि यस्य – लौकिक विग्रह

बहिः लोमन् जस् – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुव्रीहि समास प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति लोप, अन्तर् लोमन्, बहिः लोमन् शब्दों से प्रकृत सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अन्तर् लोमन् अ, बहिः लोमन् अ इस स्थिति में 'यचि भम्' से भसंज्ञा, 'अचोऽन्त्यादि टि' से टिसंज्ञा 'नस्तद्धिते' सूत्र से टि संज्ञक अन् भाग का लोप, अन्तर्लोम, बहिः के विसर्ग के स्थान पर सकार एवं 'ससजुषो रुः' से रुत्व करने पर बर्हिर्लोम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग कर देने पर अन्तर्लोमः, बहिर्लोमः शब्द निष्पन्न होते हैं।

निष्ठा (पा. सू. 2। 2। 136)

बहुव्रीहि समास में निष्ठाप्रत्ययान्त शब्द का पूर्व प्रयोग होता है।

क्त एवं क्तवतु प्रत्ययों की निष्ठा संज्ञा होती है। ये प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में होते हैं वे निष्ठा प्रत्ययान्त शब्द कहे जाते हैं। इस तरह उन निष्ठा प्रत्ययान्त शब्दों का बहुव्रीहि समास में पूर्वप्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

युक्तयोगः युक्तः योगः येन सः जिसका योग सफल हो गया है = सिद्ध योगी। लौकिक विग्रह।

युक्त सु योग सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'अनेकमन्यपदार्थे' से पूर्ववत् समास प्रातिपदिकसंज्ञा एवं विभक्तिलोप करके प्रकृत सूत्र से निष्ठा प्रत्ययान्त 'युक्त' शब्द का पूर्व प्रयोग, पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा सुप्रत्यय एवं रुत्व विसर्ग कर देने पर 'युक्तयोगः' शब्द निष्पन्न होता है। इसी प्रकार –

कृतकृत्यः	कृतं कृत्यं येन सः	–	लौकिक विग्रह
	कृत सु कृत्य सु	–	अलौकिक विग्रह
कृतकार्यः	कृतं कार्यं येन सः	–	लौकिक विग्रह
	कृत सु कार्य सु	–	अलौकिक विग्रह

14.5 द्वन्द्व समास

प्रस्तावना – यहाँ सर्वप्रथम 'द्वन्द्व' पद के अर्थ को स्पष्ट करके उसके भेदचतुष्टय का प्रतिपादन तथा उन चारों भेदों में से अति उपयोगी दो भेदों का सूत्रोदाहरण सहित विवेचन किया जाना है।

चार्थे द्वन्द्वः (पा. सू. 2। 2। 29)

'च' के अर्थ में विद्यमान अनेक प्रातिपदिक मिलते हैं उससे द्वन्द्व समास होता है।

द्वन्द्व का अर्थ है – द्वौ च द्वौ च द्वन्द्वः। इस तरह द्वन्द्व समास का यह लक्षण व्यवस्थित किया गया है कि – उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः। अर्थात् जिस समास में पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पदों के अर्थ की प्रधानता होती है वह द्वन्द्व समास कहलाता है इसे सूत्रकार पाणिनि ने 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र द्वारा व्यवस्थित कर दिया है।

14.5.1 द्वन्द्व समास के चतुर्विध भेद

इस 'च' के अर्थ में होने वाला द्वन्द्व समास चार प्रकार का होता है –

1. समुच्चय 2. अन्वाचय 3. इतरेतरयोग 4. समाहार।

इनके लक्षण क्रमशः इस प्रकार हैं –

1. **समुच्चय** – जहाँ परस्पर निरपेक्ष अनेक पद किसी एक द्रव्य अथवा क्रिया से सम्बन्धित होते हैं तो वह समुच्चय कहलाता है। उदाहरण: 'ईश्वरं गुरुं च भजस्व।' ईश्वर और गुरु का भजन करो।

2. **अन्वाचय** – जब दो पदों में से एक मुख्य तथा दूसरा गौण रूप में भिन्न-भिन्न क्रिया से युक्त होता है तो वह अन्वाचय कहलाता है। उदाहरणत: भिक्षाम् अट गां चानय। भिक्षा को जाओ और गाय को भी लेते आना। यहाँ भिक्षा के लिए अटन मुख्य तथा गाय का आनयन गौण है। इन दोनों भेदों में सामर्थ्य का अभाव होने से समास नहीं होता है।

3. **इतरेतरयोग** – जब परस्पर सापेक्ष अनेक पदार्थ मिलकर किसी एक क्रिया आदि से युक्त होते हैं तो वह इतरेतर योग कहलाता है। उदाहरणत: धवखदिरौ छिन्धि (धव और खदिर के पेड़ को काटो) यहाँ धव और खदिर समूह के रूप में छेदन क्रिया में कर्म के रूप में युक्त हो रहे हैं। अत: यहाँ इतरेतर योग द्वन्द्व है।

4. **समाहार** – समाहार का अर्थ है समूह। इसकी यह विशेषता है कि समाहार अर्थ वाले समूह के अवयव अलग भासित न होकर समुच्चय रूप होते हैं। फलत: यहाँ हमेशा एकवचन तथा नपुंसक लिङ्ग का प्रयोग होता है। उदाहरणत: – संज्ञापरिभाषम्। संज्ञा और परिभाषा का समूह।

14.6 पूर्वनिपात के नियम

14.6.1 द्वन्द्वे घि (पा. सू. 2। 2। 32)

द्वन्द्व समास में घिसंज्ञक शब्द का पूर्व प्रयोग होता है।

'शेषो घ्यसखि' सूत्र से इकारान्त, उकारान्त किन्तु सखि शब्द को छोड़कर अन्य की घि संज्ञा होती है। इस तरह प्रकृत नियम से इस घिसंज्ञक शब्द का पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण –

हरिहरौ – हरिश्च हरश्च – लौकिक विग्रह

हरि सु हर सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'चार्थे द्वन्द्व:' सूत्र से हरि और हर शब्द का इतरेतर योग में द्वन्द्वसमास प्रातिपदिक संज्ञा करके विभक्तियों का लोप 'द्वन्द्वे घि' सूत्र से घिसंज्ञक हरि शब्द का पूर्वप्रयोग, पुन: प्रातिपदिक संज्ञा करके प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय, 'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि रूप एकादेश करने पर 'हरिहरौ' प्रयोग निष्पन्न होता है।

14.6.2 अजाद्यदन्तम् (पा. सू. 2। 2। 33)

अजादि (अच् आदि) एवं अकारान्त शब्द का द्वन्द्व समास में पूर्व में प्रयोग किया जाता है अर्थात् ऐसा शब्द जो अजादि (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ) में से कोई भी स्वर पद के प्रारम्भ में हो तथा वह अकारान्त भी हो तो उसका इस द्वन्द्व समास में पूर्व प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

ईशकृष्णौ – ईशश्च कृष्णश्च – लौकिक विग्रह

ईश सु कृष्ण सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ 'चार्थे द्वन्द्व:' सूत्र से इतरेतर योग द्वन्द्व समास, प्रातिपदिकसंज्ञा करके दोनों विभक्तियों का लोप 'अजाद्यदन्तम्' सूत्र से अजादि एवं अकारान्त 'ईश' शब्द का पूर्व प्रयोग, पुन: प्रातिपदिक संज्ञा, प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय एवं वृद्धि रूप एकादेश करने पर 'ईशकृष्णौ' प्रयोग निष्पन्न होता है। इसी प्रकार –

अस्त्रशस्त्रम् अस्त्राणि च शस्त्राणि च तेषां समाहार: – लौकिक विग्रह

	अस्त्र जस् शस्त्र जस्	–	अलौकिक विग्रह
उष्ट्रखरम्	उष्ट्राश्च खराश्च तेषां समाहार:	–	लौकिक विग्रह
	उष्ट्र जस् खर जस्	–	अलौकिक विग्रह
उष्ट्रशशकम्	उष्ट्राश्च शशकाश्च तेषां समाहार:	–	लौकिक विग्रह
	उष्ट्र जस् शशक जस्	–	अलौकिक विग्रह
अश्वरथम्	अश्वाश्च रथाश्च तेषां समाहार:	–	लौकिक विग्रह
	अश्व जस् रथ जस्	–	अलौकिक विग्रह

14.6.3 अल्पाच्तरम् (पा. सू. 2। 2। 34)

पूर्व एवं उत्तर दोनों पदों में से जिसमें सबसे कम स्वर दिखाई पड़ता है उस पद का द्वन्द्व समास में पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण –

शिवकेशवौ – शिवश्च केशवश्च – लौकिक विग्रह

शिव सु केशव सु – अलौकिक विग्रह

यहाँ शिव एवं केशव शब्द में 'चार्थे द्वन्द्व:' सूत्र में इतरेतर योग द्वन्द्व समास, प्रातिपदिकसंज्ञा करके दोनों पदों की विभक्तियों का लोप, 'अल्पाच्तरम्' सूत्र से अल्प अच् वाले 'शिव' शब्द का पूर्व प्रयोग, पुन: प्रातिपदिकसंज्ञा प्रथमा द्विवचन में 'औ' प्रत्यय वृद्धिरेचि सूत्र में वृद्धि रूप एकादेश करने पर यह प्रयोग निष्पन्न होता है। इसी प्रकार –

प्लक्षन्यग्रोधम्	प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च	–	लौकिक विग्रह
	प्लक्ष सु न्यग्रोध सु	–	अलौकिक विग्रह
धवखदिरौ	धवश्च खदिरश्च	–	लौकिक विग्रह
	धव सु खदिर सु	–	अलौकिक विग्रह

विशेष :– एक से अधिक अल्पाच् होने पर एक का पूर्वनिपात अवश्य होता है। यथा – शङ्खदुन्दुभिवीणा:, शङ्खवीणादुन्दुभय:, वीणाशङ्खदुन्दुभय:, वीणादुन्दुभिशङ्खा:। इस सूत्र से सम्बन्धित अनेक वार्तिक व्यवस्थित किये गये हैं जिन्हें कौमुदीग्रन्थ से समझा जा सकता है।

आनङ् ऋतो द्वन्द्वे (पा.सू. 6। 3। 24)

विद्या एवं योनि सम्बन्धवाची ऋकारान्त शब्दों से द्वन्द्व समास में आनङ् आदेश होता है उत्तरपद परे रहते।

यहाँ आनङ् आदेश के विधान हेतु दो प्रकार के सम्बन्ध को ग्रहण किया गया है। एक विद्या सम्बन्ध जो गुरु, आचार्य आदि से होता है तथा दूसरा योनि अर्थात् रक्त सम्बन्ध जो माता–पिता से प्राप्त होता है। यह आनङ् आदेश ङित् होने के कारण अन्तिम वर्ण के स्थान पर होता है।

14.6.4 पिता मात्रा (पा. सू. 1। 2। 7)

मातृ शब्द के साथ पितृ शब्द का प्रयोग होने विकल्प से पितृ शब्द का एकशेष हो जाता है। उदाहरण –

पितरौ, मातापितरौ – माता च पिता च – लौकिक विग्रह

	मातृ सु पितृ सु	–	अलौकिक विग्रह

यहाँ 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से इतरेतरयोग द्वन्द्व समास प्रातिपदिक संज्ञा एवं विभक्ति लोप 'आनङ् ऋतो द्वन्द्वे' सूत्र से मातृ शब्द के ऋकार के स्थान पर 'ङिच्च' सूत्र की सहायता से आनङ् आदेश 'मात् आनङ् पितृ' इस स्थिति में अनुबन्ध लोप एवं 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से 'न' का लोप, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा करके प्रथमा द्विवचन में 'औ प्रत्यय' 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' से पितृ शब्द के ऋकार को अ गुण तथा 'उरण रपरः' सूत्र से र पर 'मातापितरौ' इस स्थिति में 'पिता मात्रा' सूत्र से एकशेष होने पर 'पितरौ' एवं पक्ष में 'मातापितरौ' ये दो प्रयोग निष्पन्न होते हैं।

14.7 द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् (पा.सू. 2।4।2) समाहार अर्थ में द्वन्द्व समास

प्राण्यङ्गवाचक, तूरी आदि वाद्य अङ्ग वाचक एवं सेनाङ्गवाचक शब्दों का द्वन्द्व समास में एकवद्भाव होता है।

यहाँ एकवद्भाव का अर्थ है – एक साथ मिलकर समाहार रूप अर्थ का कथन करना। 'प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' शब्द में द्वन्द्व समास किया गया है –

प्राणी च तूर्यं च सेना च इति प्राणितूर्यङ्ग सेनाः, तासामङ्गानि इति प्राणितूर्यसेनाङ्गानि तेषाम्। उदाहरण –

पाणिपादम् –	पाणी च पादौ च एषां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	पाणि औ पाद औ	–	अलौकिक विग्रह
मादर्ङ्गिकवैणविकम्	मादर्ङ्गिकाश्च वैणविकाश्च एषां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	मादर्ङ्गिक जस् वैणविक जस्	–	अलौकिक विग्रह
रथिकाश्वारोहम्	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च एषां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	रथिक जस् अश्वारोह जस्	–	अलौकिक विग्रह

इन सभी उदाहरण वाक्यों में 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से समाहार द्वन्द्व समास, प्रातिपदिक संज्ञा करके विभक्तियों का लोप, पुनःप्रातिपदिक संज्ञा, 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' सूत्र से एकवद्भाव, प्रथमा, एकवचन में सुप्रत्यय 'स नपुंसकम्' से नपुंसक संज्ञा करके 'अतोऽम्' सूत्र से सु को अम् आदेश एवं 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप एकादेश करने पर ये प्रयोग निष्पन्न होते हैं। इसी प्रकार –

शिरोग्रीवम् –	शिरश्च ग्रीवा च अनयोः समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	शिरस् सु ग्रीवा सु	–	अलौकिक विग्रह
उष्ट्रखरम् –	उष्ट्राश्च खराश्च एषां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	उष्ट्र जस् खर जस्	–	अलौकिक विग्रह

क्षुद्रजन्तवः (पा.सू. 2। 4। 8)

क्षुद्रजन्तुवाची शब्दों का समाहार द्वन्द्व समास में एकवद्भाव होता है। उदाहरण –

यूकालिक्षम् –	यूकाश्च लिक्षाश्च एषां समाहारः	–	लौकिक विग्रह
	यूका जस् लिक्ष जस्	–	अलौकिक विग्रह

यहाँ 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से समाहार द्वन्द्वसमास, प्रातिपदिकसंज्ञा करके विभक्तियों का लोप, पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा, 'क्षुद्रजन्तवः' सूत्र से क्षुद्र जन्तुवाची यूका एवं लिक्षा शब्दों का समाहार द्वन्द्व में एकवद्भाव होने से प्रथमा एकवचन

में सुप्रत्यय, 'स नपुंसकम्' में नपुंसक संज्ञा करने पर 'यूकालिक्षम्' प्रयोग निष्पन्न होता है। (सिर के बालों में पसीने के कारण उत्पन्न होने वाले जन्तु विशेष यूका और लिक्षा (लीख) कहलाते हैं)।

विशेष : यहां यह धातव्य है कि नेवले से लेकर अवर सभी प्राणी क्षुद्र जन्तु के अन्तर्गत गिने जाते हैं।

येषां च विरोधः शाश्वतिकः (पा. सू. 2। 4। 9)

जिन जीवों का जन्मजात विरोध होता है उनमें भी समाहारद्वन्द्व में एकवद्भाव होता है। यहाँ विरोध शब्द का अर्थ वैर है न कि 'साथ-साथ न रहना' यह अर्थ। अतः स्वाभाविक वैर, शत्रुता अर्थ प्रकट होने पर समाहार द्वन्द्व में एकवद्भाव होता है। उदाहरण -

अहिनकुलम् -	अहयः नकुलाश्च	-	लौकिक विग्रह
	अहि जस् नकुल जस्	-	अलौकिक विग्रह
गोव्याघ्रम् -	गावश्च व्याघ्राश्च	-	लौकिक विग्रह
	गो जस् व्याघ्र जस्	-	अलौकिक विग्रह
काकोलूकम्-	काकाश्च उलूकाश्च	-	लौकिक विग्रह
	काक जस् उलूक जस्	-	अलौकिक विग्रह

इन सभी उदाहरणों में 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से समाहार द्वन्द्व समास प्रातिपदिक संज्ञा करके विभक्तियों का लोप, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, 'येषां च विरोधः शाश्वतिकः' सूत्र से एकवद्भाव होने से प्रथमा एकवचन में सुप्रत्यय, 'अतोऽम्' सूत्र से 'सु' के स्थान पर अम् आदेश एवं पूर्वरूप करने पर ये प्रयोग निष्पन्न होते हैं।

14.8 बोध-प्रश्न

1. 'च' के चार अर्थों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
2. इतरेतर द्वन्द्व और समाहारद्वन्द्व में किस-किस लिङ्ग और वचन का प्रयोग किया जाता है।
3. निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या करें -

   1. चार्थे द्वन्द्वः 2. अजाद्यदन्तम् 3. पिता मात्रा

   4. आनङ्ऋतो द्वन्द्वे 5. द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्।
4. अधोलिखित प्रयोगों की विग्रहपूर्वक ससूत्र सिद्धि करें -

   पितरौ, हरिहरौ, यूकालिक्षम्, रथिकाश्वारोहम्, काकोलूकम्।
5. बहुव्रीहि समास का लक्षण स्पष्ट कीजिए।
6. अधोलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए -

   1. अनेकमन्यपदार्थे, 2. सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ

   3. हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् 4. अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः।
7. निष्ठा सूत्र का सोदाहरण स्पष्ट विवेचन कीजिए।
8. विग्रहप्रदर्शनपूर्वक अधोलिखित शब्दों की ससूत्र सिद्धि कीजिए -

1. उद्धृतौदना   2. कण्ठेकाल: 3. अपुत्र: 4. युक्तयोग:,   5. त्रिमूर्ध:

9. निम्नलिखित विग्रहों को समास रूप दीजिए –

1. वीरा: पुरुषा: यस्मिन्   2. चित्रा: गाव: यस्य

3. अविद्यमान: पुत्र: यस्य   4. अन्त: लोमानि यस्य

14.9 कतिपय उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – भैमी व्याख्या सहित – पं. भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जयपुर
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – महेश कुशवाहा, वाराणसी
4. प्रौढ़ रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, वाराणसी

14.10 बोध–प्रश्नों के उत्तर

1. द्रष्टव्य, 14.6.1
2. द्रष्टव्य, 14.6.1
3. द्रष्टव्य, 14.6 से 14.8 पर्यन्त इकाई
4. द्रष्टव्य, 14.6 से 14.8 पर्यन्त इकाई

5–9 इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी 14.2 से 14.4 तक अंश में से स्वयं खोजें।